संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -191 सोमवार, 13 मई 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

बंगाल के संदेशखाली में फिर तनाव का माहौल

» टीएमसी विधायक के सहयोगी पर हुआ हमला...

कोलकाता,12 मई 2024(ए)। पश्चिम बंगाल के संदेशखाली द्वीप पर रविवार को फिर तनाव के हालात पैदा हो गए। यह स्थिति तब बनी जब बीजेपी समर्थकों ने एक विरोध प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर एक तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ता पर हमला कर दिया। तृणमूल कांग्रेस के विधायक सुकुमार महता के सहयोगी टाटान गायेन पर स्थानीय पुलिस स्टेशन से कुछ ही दूरी पर पत्थरों से हमला किया गया। घटना के तुरंत बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मौके पर दंगा नियंत्रण बल को भी बुला लिया गया। बीजेपी कार्यकर्ताओं ने रविवार को संदेशखाली द्वीप पर विरोध प्रदर्शन किया.। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने तृणमूल कांग्रेस सरकार पर उनके खिलाफ झूठे मामले दर्ज करने का आरोप लगाया।

बंगाल के उत्तर 24 परगना का यह द्वीप उस समय राष्ट्रीय सुर्खियों में आ गया था जब यहां के निवासियों ने तृणमूल कांग्रेस के ताकतवर नेता शेख शाहजहां और उनके साथी स्थानीय टीएमसी नेताओं पर जमीन हड़पने, जबरन वसूली करने और यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया था। टीएमसी से निष्कासित किए जा चुके शेख शाहजहां अब प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों पर भीड़ द्वारा हमला किए जाने के मामले में सीबीआई की हिरासत में हैं.

वीडियो वायरल होने पर केस में आया नया मोड़

संदेशखाली केस में पिछले महीने की शुरुआत में एक वीडियो के वायरल होने पर चौंकाने वाला मोड़ आ गया था। इस वीडियो में स्थानीय बीजेपी नेता गंगाधर कोयल कथित तौर पर यह कहते हुए दिख रहे थे कि संदेशखाली में कोई बलात्कार या यौन उत्पीड़न नहीं हुआ था और बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता बीजेपी के सुवेंदु अधिकारी के कहने पर महिलाओं को शिकायत दर्ज कराने के लिए राजी किया गया था। बीजेपी और इसके नेताओं ने दावा किया है कि वीडियो क्लिप में छेड़छाड़ की गई है। एक अन्य चौंकाने वाले घटनाक्रम में एक महिला ने आरोप लगाया है कि बीजेपी से जुड़े लोगों ने उससे एक कोरे कागज पर हस्ताक्षर कराए और फिर उसके नाम पर बलात्कार की झूठी शिकायत लिखी। इसके बाद राजनीतिक घमासान छिड़ गया है और टीएमसी ने बीजेपी पर राजनीतिक लाभ के लिए उसकी छवि खराब करने के लिए कहानियां गढ़ने का आरोप लगाया है।

टीएमसी नेताओं पर फर्जी वीडियो प्रसारित करने का आरोप

संदेशखाली में रविवार को बीजेपी कार्यकर्ताओं ने स्थानीय पुलिस थाने के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और स्थानीय तृणमूल कांग्रेस नेताओं के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने टीएमसी नेताओं पर फर्जी वीडियो प्रसारित करने का आरोप लगाया। इन प्रदर्शनकारियों में बशीरहाट लोकसभा सीट पर बीजेपी की उम्मीदवार संदेशखाली की निवासी रेखा पात्रा भी शामिल थीं।

मीडिया से बातचीत में एक महिला बीजेपी समर्थक ने स्थानीय प्रशासन पर बीजेपी समर्थकों पर झूठा मुकदमा दर्ज करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि,तृणमूल सरकार हमें परेशान कर रही है क्योंकि उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है। यौन उत्पीड़न के आरोप लगाने के लिए महिलाओं को पैसा दिए जाने के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा, क्या ममता बनर्जी एक बार भी यहां आईं और किसी को हमें पैसा देते हुए देखा? संदेशखाली की माताएं अपने सम्मान के लिए सड़कों पर उतरी हैं। एक अन्य महिला प्रदर्शनकारी ने उस महिला पर निशाना साधा जिसने आरोप लगाया है कि बीजेपी नेताओं ने उसके नाम पर रेप की झूठी शिकायत दर्ज कराई है.। उन्होंने कहा कि, उन्हें यह दावा करने के लिए कितना पैसा मिला है कि सब कुछ झूठ है? उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए, अन्यथा लोग उन्हें नहीं छोड़ेंगे।

हमले के लिए किसी ने उकसाया होगाः टीएमसी एमएलए

तृणमूल कांग्रेस के विधायक सुकुमार महता ने कहा है कि उनके सहयोगी पर हमले के लिए किसी ने उकसाया होगा। उन्होंने उन्होंने स्थानीय मीडिया से कहा कि, उन्होंने थाने का घेराव किया था। फिर उन्हें हमले के लिए उकसाया गया। क्या यह राजनीतिक शालीनता है? घटना के विजुअल्स में महता के सहयोगी के आसपास महिलाएं दिखाई दे रही हैं।संदेशखाली के एक बीजेपी नेता सजल घोष ने कहा है कि संदेशखाली में 12 साल से कोई कानून व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने मीडिया से कहा, आज तक तृणमूल कांग्रेस ने जिसे चाहा उसे पीटा. हमारे तीन कार्यकर्ताओं की गोली मारकर हत्या कर दी गई, उनके शव नहीं मिले. इसलिए आज की घटना को दुर्भाग्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

संक्षिप्त खबर

मैंने नहीं कांग्रेस ने मुझे धोखा दिया

सूरत,12 मई 2024(ए)। गुजरात की सूरत लोकसभा सीट पर नामांकन खारिज होने के बाद अयोग्य करार दिए गए कांग्रेस उम्मीदवार नीलेश कुंभानी 20 दिनों बाद मीडिया के सामने नजर आए। नीलेश कुंभानी ने आरोप लगाया कि यह कांग्रेस ही थी, जिसने 2017 में उन्हें सबसे पहले धोखा दिया था।

नीलेश कुंभानी ने यह भी कहा कि वह गुजरात कांग्रेस अध्यक्ष शक्तिसिंह गोहिल और पार्टी के राजकोट लोकसभा उम्मीदवार परेश धनानी के प्रति सम्मान के कारण इतने दिनों तक चुप रहे।

टीवी एक्ट्रेस की कार दुर्घटना में मौत

मुंबई,12 मई 2024(ए)। तेलुगु टेलीविजन सीरीज त्रिनयनी में तिलोत्तमा की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री पवित्रा जयराम की रविवार को एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। आंध्र प्रदेश के मेहबूबनगर के पास एक भीषण कार दुर्घटना में अभिनेत्री की मौके पर ही मौत हो गई। कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। इसी बीच हैदराबाद से वानापर्थी आ रही एक बस कार के दाहिने हिस्से से टकरा गई। यह हादसा कर्नाटक के मांड्या जिले के हनाकेरे लौटते समय हुआ।

दिल्ली एयरपोर्ट समेत 2 अस्पतालों को भी बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली,12 मई 2024(ए)। दिल्ली के बुराड़ी अस्पताल में बम की धमकी को लेकर एक ईमेल के बाद प्रशासनिक अधिकारियों के बीच हड़कंप की स्थिति बन गई। मौके पर बम निरोधक टीमों के साथ अधिकारी पहुंचे और सर्च अभियान शुरू किया गया। हालांकि अब तक किसी तरह के विस्फोटक की बरामदगी नहीं हुई है।

सस्ती बिजली से लेकर फ्री इलाज,लोकसभा चुनाव को लेकर केजरीवाल ने दी ये गारंटियां

अरविंद केजरीवाल की ये है 10 गारंटी

- सभी गरीबों को 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली।
- सभी के लिए अच्छी और उत्कृष्ट मुफ्त शिक्षा।
- बेहतर स्वास्थ्य सेवा, हर गांव, हर मोहल्ले में मोहल्ला क्लीनिक खोले जाएंगे।
- राष्ट्र सर्वोपरि-केजरीवाल ने कहा कि भारतीय भूमि को कथित चीन के कब्जे से 'मुक्त कराया जाएगा।
- अग्निवीर योजना होगा बंद-सीएम केजरीवाल ने कहा कि अग्निवीर योजना बंद करना हमारी गारंटी है।
- किसानों को स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया जाएगा।
- दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा-सीएम केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देना भी मेरी गारंटी का हिस्सा है।
- रोजगार-सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि देश की बेरोजगारी को व्यवस्थागत तरीके से दूर किया जाएगा।
- भ्रष्टाचार पर करेंगे वार-भाजपा पर हमला करते हुए सीएम केजरीवाल ने कहा कि ईमानदारों को जेल भेजने और भ्रष्टाचारियों को संरक्षण नहीं दिया जाएगा। दिल्ली और पंजाब की तरह भ्रष्टाचार पर सही मायनों में प्रहार किया जाएगा।
- जीएसटीको करेंगे खत्म-सीएम केजरीवाल ने कहा कि सत्ता में आने पर हम जीएसटी का आतंक खत्म करेंगे।

» केजरीवाल बोले आप को चुनेंगे तो मुझे जेल नहीं जाना पड़ेगा...

» मोदी को उत्तराधिकारी का नाम बताना चाहिए, ये नियम क्या सिर्फ आडवाणी के लिए था...

नई दिल्ली,12 मई 2024(ए)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार 12 मई को दिल्ली में रोड शो किया। इसमें उन्होंने कहा कि अगर आम आदमी पार्टी को वोट देंगे तो मुझे नहीं जाना पड़ेगा। अगर मैं जेल में वापस गया तो बीजेपी आपके सारे काम रोक देगी। वे मुफ्त बिजली, मोहल्ला क्लीनिक, अस्पताल बंद कर देंगे। स्कूलों का स्तर भी गिर जाएगा। दिल्ली में 25 मई को वोटिंग है।

वहीं, तिहाड़ जेल से बाहर आने के बाद केजरीवाल ने रविवार को लगातार दूसरे दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने एक बार फिर प्रधानमंत्री के रिटायरमेंट का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा- अगले साल पीएम मोदी 75 साल के हो जाएंगे। उनके रिटायरमेंट का भाजपा नेताओं ने खंडन किया है। प्रधानमंत्री इस पर चुप हैं। उन्हें अपने उत्तराधिकारी का नाम बताना चाहिए।केजरीवाल ने कहा- अगर पीएम मोदी रिटायर नहीं होंगे तो वे कह दें कि 75 साल उम्र होने पर रिटायरमेंट का नियम उन पर लागू नहीं होगा। ये नियम सिर्फ आडवाणी, अन्य कुछ नेताओं के लिए था। वे वन नेशन-वन लीडर आइडिया के तहत विपक्ष के सभी नेताओं को जेल भेज रहे हैं और अपने नेताओं की राजनीति खत्म कर रहे हैं। पीएम मोदी ने शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे, डॉ. रमन सिंह जैसे नेताओं की राजनीति खत्म कर दी। अब अगला नंबर यूपी के सीएम योगी का है। भाजपा ये तो कह रही है कि मोदी जी रिटायर नहीं होंगे, लेकिन ये नहीं कह रही कि योगी जी को नहीं हटाया जाएगा। मतलब पक्का है कि अगले दो महीने में योगी को सीएम पद से हटाया जाएगा।

केजरीवाल ने लोकसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी की 10 गारंटी की भी घोषणा की। उनसे जब पूछा गया कि क्या वे इंडिया ब्लॉक की ओर से पीएम फेस होंगे। इस पर उन्होंने कहा- मैं प्रधानमंत्री का चेहरा नहीं हूं। उन्होंने यह भी कहा कि अगर विपक्षी पार्टियां सत्ता में आती हैं तो वह सुनिश्चित करेंगे कि आप की गारंटी पूरी हो।

दिल्ली सीएम ने केजरीवाल की 10 गारंटी का ऐलान किया

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने लोकसभा चुनाव को लेकर देश के लोगों के लिए केजरीवाल की 10 गारंटी का भी ऐलान किया है। उन्होंने इंडिया ब्लॉक से माफी मांगते हुए कहा कि मैं गठबंधन के नेताओं को बताए बिना ही गारंटियों की घोषणा कर रहा हूं। लेकिन आप के स्कूल और अस्पताल खोलने के वादे पर सहयोगी दलों को कोई आपत्ति नहीं होगी। केजरीवाल ने कहा- मेरी गिरफ्तारी के कारण इसमें देरी हुई, लेकिन अभी भी चुनाव के कई फेज बाकी हैं। अगर इंडिया ब्लॉक सत्ता में आई, तो इन गारंटियों को लागू करने की गारंटी मैं लेता हूं।

पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक पर दर्ज होगी एफआईआर

» पोते और बेटे के साथ की थी वोटिंग, चुनाव आयोग करेगा कार्रवाई

भोपाल,12 मई 2024(ए)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के दौरान मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री कमल पटेल और कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने अपने पोते और बेटे के साथ वोट डाला था। इस पर चुनाव आयोग ने संज्ञान लिया है। मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि भोपाल जिला पंचायत सदस्य विनर मेहर ने अपने बेटे से वोट डलवाया था उन पर कार्रवाई हुई है। वहीं पूर्व मंत्री कमल पटेल ने अपने पोते के साथ वोट डाला था। साथ ही कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने अपने बेटे के साथ वोट डाला था। इन पर भी कार्रवाई होगी। हरदा में पूर्व मंत्री कमल पटेल ने अपने पोते के साथ मतदान केंद्र पहुंचकर न सिर्फ वोट डाला,बल्कि उसका फोटो का सोशल मीडिया पर भी शेयर किया। इस पर कांग्रेस ने चुनाव आयोग से कार्रवाई करने की मांग की थी।

अप्रैल में भारत में 1.8 लाख से ज्यादा अकाउंट्स किए बैन

नई दिल्ली,12 मई 2024(ए)। एलन मस्क द्वारा संचालित एक्स कॉर्प ने 26 मार्च से 25 अप्रैल के बीच भारत में 184,241 अकाउंट्स पर बैन लगा दिया। इनमें ज्यादातर अकाउंट बाल यौन शोषण और गैर-सहमति नग्नता को बढ़ावा देने वाले थे। माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म ने देश में आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए 1,303 अकाउंट्स को भी हटा दिया। कुल मिलाकर एक्स ने इस अवधि में 185,544 अकाउंट्स पर बैन लगाया।एक्स ने नए आईटी नियम, 2021 के अनुपालन में अपनी मासिक रिपोर्ट में कहा, ÷उसे अपने शिकायत निवारण तंत्र (ग्रीवेंस रिड्रेसल मैकेनिज्म) के माध्यम से एक ही समय सीमा में भारत में यूजर्स से 18,562 शिकायतें प्राप्त हुईं।

यमुनोत्री धाम में भक्तों की भीड़ देख पुलिस प्रशासन के हाथ-पांव फूले

» श्रद्धालुओं से कहा- स्थगित करें यात्रा

उत्तरकाशी,12 मई 2024(ए)। 12 मई को श्रद्धालुओं के लिए बद्रीनाथ धाम के कपाट खोल दिए गए हैं। इस मौके पर बद्रीनाथ धाम के रावल और बदरी पांडुकेश्वर बद्रीनाथ धाम में भारी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं को देख पुलिस-प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए। वहीं उत्तरकाशी पुलिस ने भक्तों की तादात को देखते हुए आज की यमुनोत्री यात्रा स्थगित करने की अपील की है।

यमुनोत्री मार्ग का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें धाम की ओर जाने वाले पहाड़ी मार्ग पर भारी संख्या में पहुंचे श्रद्धालु दिख रहे हैं। बता दें कि 10 मई अक्षय तृतीया के दिन चार धाम यात्रा शुरू हो गई है। केदारनाथ धाम के दर्शन के लिए पहले ही दिन करीब 32 हजार श्रद्धालु पहुंचे। वहीं आज यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के बाद भी भारी से अधिक संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। इतनी तादात में भक्तों की भीड़ देख पुलिस-प्रशासन के माथे पर चिंता के पसीने बह रहे हैं। सोशल मीडिया पर यमुनोत्री मार्ग का एक वीडियो वायरल होने के बाद राज्य सरकार की तैयारियों पर सवाल खड़े हो गए हैं।वीडियो में दर्शन करने को लेकर भक्तों का उत्साह साफ़ देखा जा रहा है और श्रद्धालुओं की भीड़ से खचाखच भरा नजारा देख उत्तरकाशी पुलिस ने आज यमुनोत्री यात्रा स्थगित करने की अपील की है। पुलिस ने ट्वीट कर लिखा है किज आज श्री यमुनोत्री धाम पर क्षमता के अनुसार पर्याप्त श्रद्धालु यात्रा के लिये पहुँच चुके हैं। अब और अधिक श्रद्धालुओं को भेजना जोखिम भरा है। जो भी श्रद्धालु आज यमुनोत्री यात्रा पर आने जा रहे हैं, उनसे विनम्र अपील है कि आज यमुनोत्री जी की यात्रा स्थगित करें।

21 साल बाद पृथ्वी से टकराया सबसे मजबूत सौर-तूफान

» कम्युनिकेशन और जीपीएस सिस्टम पर दिखेगा बड़ा असर

नई दिल्ली,12 मई 2024(ए)। एक मजबूत सौर तूफान हमारी पृथ्वी से टकराया है। इस तूफान को भू-चुंबकीय तूफान के नाम से जाना जाता है। इस तूफान का असर नेविगेशन, संचार और रेडियो सिग्नलों पर पड़ सकता है।इस तूफान को 2003 के बाद से सबसे खतरनाक तूफान माना जा रहा है। इसी कड़ी में स्टारलिंक सैटेलाइट के ऑनर एलन मस्क ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल से एक लेटेस्ट पोस्ट जारी किया है। एलन मस्क अपने इस पोस्ट में जियोमैग्नेटिक सौर-तूफान को एक बड़ा तूफान बताते हैं। वे कहते हैं कि यह लंबे समय बाद एक बड़ा तूफान है। स्टारलिंक सैटेलाइट बहुत दबाव में है। हालांकि, हम अभी भी टिके हुए हैं। मस्क अपने इस पोस्ट में जियोमैग्नेटिक सौर-तूफान का तीन घंटों का डेटा शेयर करते हैं, जो कि 9 मई 2024 को शुरू हुआ था। मस्क ने स्पेस वैदर प्रिडिक्शन का चार्ट दिखाया गया है। इस चार्ट में जियोमैग्नेटिक सौर-तूफान की फ्रिक्वेंसी दिखाई गई है।

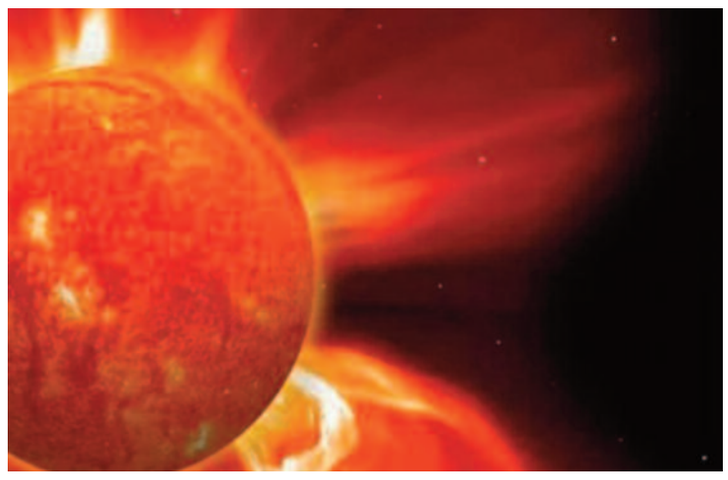

एनओएए के अनुसार, इंसान सोलर साइकिल 25 के पीक के बेहद करीब हैं। यह 11 साल में घटने वाले ऐसा समय है जब सूरज अपने उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों फ्लिप करता है। इस दौरान बहुत सी अंतरिक्ष और मौसम से जुड़ी घटनाएं घट सकती हैं। इस स्थिति को सोलर मैक्सिमम भी कहा जाता है। एनओएए भू-चुंबकीय तूफानों को जी1 से जी 5 तक के स्केल पर रैंक करता है। इस रैंक के साथ कमजोर और सबसे छोटे तूफान से लेकर सबसे बड़े तूफान को दिखाया जाता है। जहां जी1 को कमजोर और जी 5 को सबसे बड़ा तूफान माना जाता है।दरअसल, सूरज की सतह पर कोरोनल मास इजेक्शन यानी विशाल विस्फोट होते हैं। इस विस्फोट के साथ ऊर्जावान कणों की धाराएं अंतरिक्ष में पहुंचती है। यही कण जब पृथ्वी तक पहुंचते हैं तो चुंबकीय क्षेत्र में गड़बड़ी पैदा करते हैं। इस स्थिति को ही भू-चुंबकीय तूफान कहा जाता है।

इन तूफान का क्या पड़ता है असर

✷. इन तूफान का सीधा असर कम्युनिकेशन सिस्टम, जीपीएस और इलेक्ट्रिसिटी पर पड़ सकता है।

✷. जी 5 तूफान की वजह से कई घंटों तक हाई फ्रीक्वेंसी रेडियो ब्लैकआउट की घटना घट सकती है।

✷. इन तूफान का असर पावर सप्लाई में भी देखा जा सकता है

संपादकीय

भ्रामक प्रचार से बाज आना चाहिए

देश में हिंदुओं की आबादी में कमी आ रही है। धार्मिक अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण (1950-2015) दस्तावेज में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने खुलासा किया है।इसमें हिन्दू आबादी के 7.82 फीसद कम होने के साथ मुसलमानों की 43.15 फीसद बढने की बात की गई है। सिखों की आबादी 1.24 फीसद से बढकर 1.85 फीसद तथा इसाइयों की 2.24 फीसद से बढ कर 2.36 फीसद हो गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार बौद्ध भी बढ़े हैं, जबकि जैन व पारसियों की संख्या घटी है। यूं तो जनसंख्या के आंकड़े जनगणना के माध्यम से आते हैं। जो 2011 के बाद से नहीं हो सकी है। जनगणना 2021 में प्रस्तावित थी, जो करोना महामारी के कारण स्थगित कर दी गई थी। इस अध्ययन में बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक आबादी में आए उतार-चढाव के अंतरराष्ट्रीय रुझान का पता लगाने के लिए 167 देश शामिल थे, जिसके मुताबिक भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम आबादी की बढ़ोत्तरी सबसे ज्यादा हुई।जबकि बांग्लादेश में 10 फीसद व पाकिस्तान में 10 फीसद मुसलमानों की आबादी में बढ़त देखी गई। देश में मौजूदा वक्त में लोक सभा चुनाव चल रहे हैं, जिसमें सत्ताधारी दल पहले ही धार्मिक आधार पर बयानबाजियां करने और समाज में दरारें पैदा करने में हिचक नहीं रहा है। ऐसे में इस रिपोर्ट का प्रचार खास समुदाय को निशाना बनाने में सहायक साबित हो सकता है। विपक्ष भी इसे चुनावी चाल कह आरएसएस का एजेंडा चलाने का आरोप लगा रहा है। वास्तव में हम धर्मनिरपेक्ष देश हैं, जिसमें सभी धर्मो का बराबर सम्मान किया जाना और उनके साथ सहिष्णुता बरतना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। मुसलमानों की आबादी बढने के कारणों में यूं तो उनकी चार शादियां, धर्मांतरण व घुसपैठ को दोषी ठहराया जा रहा है, जबकि इसके पीछे अशिक्षा व जागरूकता की कमी अधिक है।विशेष समुदाय पर देश की जनसांख्यिकी बदलने के प्रयासों का आरोप मढना कतई उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस हकीकत को झुठलाया नहीं जा सकता कि दुनिया भर में मुसलमानों की आबादी सबसे तेजी से बढ़ रही है। बीते सौ वर्षो में वे 12.5 फीसद से बढकर 22.5 फीसद हो चुके हैं।इसलिए केवल भारत में मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या के लिए भ्रामक प्रचार से बाज आना चाहिए। साथ ही उन्हें जागरूक करने और सेहत संबंधी फायदों के विषय में आगाह करने के प्रयास करने चाहिए।

अरविंद केजरीवाल को मिली अंतरिम जमानत के सियासी मायने को ऐसे समझिए

■ हालांकि,सुप्रीम कोर्ट ने शर्त रखी थी...कि अगर चुनाव प्रचार के लिए जमानत दी जाती है...तो वह मुख्यमंत्री के तौर पर काम नहीं करेंगे...और न ही किसी फाइल पर हस्ताक्षर करेंगे...फिर भी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल भिजवाने वाली ईडी परेशान हो गई... ■

सुप्रीम कोर्ट के एक साहसिक निर्णय से जेल में बंद भारतीय राजनेताओं के चुनावों के दौरान बाहर आने और चुनाव प्रचार में अपनी भागीदारी जताने का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। समझा जाता है कि कोर्ट के इस उदार पहल से भारत में एक नई सियासी क्रांति का आगाज हो सकता है। लिहाजा, इस निर्णय के सफेद और स्याह पक्ष पर चर्चा करने से पहले यह बता दें कि दिल्ली एक्साइज पॉलिसी घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी की जांच का सामना कर रहे और पिछले 50 दिन से जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने आगामी एक जून 2024 तक के लिए अंतरिम जमानत दे दी है।

ऐसा इसलिए कि अरविंद केजरीवाल को दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति 2021-22 में कथित अनियमितताओं से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग जांच के सिलसिले में विगत 21 मार्च 2024 को ईडी ने गिरफ्तार किया था। ईडी के इस निर्णय की तब बहुत आलोचना हुई थी, क्योंकि मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए ही उन्हें गिरफ्तार किया गया था, जो भारतीय राजनीतिक इतिहास की अनोखी घटना बन चुकी है। इसी मामले में गत 8 मई 2024 को सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई की।

सुनवाई के दौरान ही न्यायमूर्ति खन्ना ने प्रवर्तन निदेशालय के वकील अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से कहा था कि वह केजरीवाल को अंतरिम राहत पर शुक्रवार को आदेश पारित कर सकते हैं। इससे एक दिन पहले भी यानी गत 7 मई को सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर कहा था कि मामले की सुनवाई जल्दी पूरी होने की उम्मीद नहीं है। ऐसे में कोर्ट लोकसभा चुनाव को देखते हुए केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने पर विचार कर सकता है।

हालांकि, कोर्ट ने शर्त रखी थी कि अगर चुनाव प्रचार के लिए जमानत दी जाती है तो वह मुख्यमंत्री के तौर पर काम नहीं करेंगे और न ही किसी फ़ाइल पर हस्ताक्षर करेंगे। फिर भी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल भिजवाने वाली ईडी परेशान हो गई। आनन-फानन में ईडी ने एक हलफनामा दायर करके उनके अंतरिम जमानत का विरोध किया और कुछ अकाट्य दलीलें भी दी। जिस पर केजरीवाल की लीगल टीम ने भी कड़ी आपत्ति जताई। जिसके दृष्टिगत सुप्रीम कोर्ट ने ईडी की सभी दलीलों को दरकिनार करते हुए केजरीवाल को अंतरिम जमानत दे दी।

यही वजह है कि जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मिलने के सियासी और न्यायिक मायने तलाशे जा रहे हैं। क्योंकि यह एक असाधारण न्यायिक आदेश है, जो अब बौद्धिक विमर्श का मुद्दा भी बन चुका है। समझा जा रहा है कि कोर्ट के ताजा निर्देश से जहां देश में जनतांत्रिक भावनाओं को बल मिलेगा, वहीं भ्रष्टाचार और अपराध में शामिल राजनेताओं का मनोबल भी बढ़ेगा। क्योंकि जेल से बाहर रहने का एक अमोघ कानूनी हथियार कोर्ट के फैसले से उन्हें मिल चुका है। अनैतिक राजनेता चुनाव की आड़ में जांच को नजरअंदाज करेंगे, चाहे वो पंचायत चुनाव हो, नगरपालिका चुनाव हो, विधानसभा चुनाव हो या फिर आम चुनाव। यदि वे गिरफ्तार किए जाते हैं तो प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मांगेंगे। दो कदम आगे की सोचते हुए उसने तर्क

लिहाजा, आने वाले दिनों में जेल में बंद भारतीय राजनेताओं के द्वारा चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मांगे जाने के मामले बढ़ेंगे।

बता दें कि ईडी ने सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा देकर यह स्पष्ट कर दिया है कि केजरीवाल को किसी भी तरह की विशेष राहत देकर चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत दिया जाना समानता और कानून के शासन के लिए अभिशाप जैसा होगा। इससे ऐसी नजीर कायम होगी कि सभी अपराध करने वाले दिया कि आजतक किसी भी राजनेता को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत नहीं दी गई, चाहे जेल में बंद वह व्यक्ति स्वयं भी प्रत्याशी क्यों न रहा हो, जबकि केजरीवाल तो उम्मीदवार भी नहीं हैं। ऐसे भी कई उदाहरण हैं कि अपराधी जेल से ही चुनाव लड़े और जीत भी गए, लेकिन उन्हें कभी इस आधार पर जमानत नहीं मिली। वैसे भी चुनाव प्रचार न तो संवैधानिक अधिकार है और न ही मौलिक अधिकार। लिहाजा ऐसा होने से कानून का उल्लंघन करने वाले हर अपराधी को राजनीतिज्ञ बनने और वर्ष भर प्रचार के मोड में रहने का प्रोत्साहन मिलेगा। राजनेता आम आदमी से ऊपर होने और विशेष दर्जे का दावा नहीं कर सकता।

ईडी ने अपनी दलील में चुनाव प्रचार के लिए केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने का विरोध करते हुए कहा कि मतदान का अधिकार, जिसे कोर्ट ने संवैधानिक अधिकार माना है, वह भी हिरासत के दौरान नहीं रहता। जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा 62(5) जेल में बंद व्यक्ति के मतदान के अधिकार में कटौती की बात करती है। यह चीज देखने लायक है कि पिछले पांच सालों में करीब 123 चुनाव हुए हैं और अगर किसी राजनेता को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत दी जाने लगे तो किसी भी राजनेता को गिरफ्तार करके जेल में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि चुनाव तो सालभर चलने वाली गतिविधि है। हर राजनीतिज्ञ हर स्तर पर यह दलील दे सकता है कि अगर उसे जमानत नहीं दी गई तो उसे न भरपाई होने वाला नुकसान होगा।

ईडी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि इस समय सिर्फ पीएमएलए कानून में ही बहुत से नेता जेल में हैं। उनके मामलों को जांचने के बाद सक्षम अथॉरिटी ने उनकी हिरासत को सही ठहराया है। बहुत से नेता पीएमएलए के अलावा अन्य अपराधों में जेल में होंगे। ऐसे में अरविंद केजरीवाल के साथ विशेष व्यवहार करने और उनकी विशेष मांग स्वीकार करने का कोई कारण नहीं है।

उसने तो यहां तक कह दिया कि केजरीवाल ने कई समन के बाद भी जांच एजेंसी के सामने पेश न होने के पीछे पांच राज्यों में चुनाव का यही आधार दिया था। ऐसे में अगर कोर्ट ने केजरीवाल को अंतरिम जमानत दी तो उनके द्वारा आप के स्टार प्रचारक होने के आधार पर प्रचार के लिए समन को नजरअंदाज करने का कारण बनाये जाने पर न्यायिक मुहर लग जाएगी। साथ ही प्रचार के लिए अन्तरिम जमानत से प्रचार की इच्छा रखने वाले नेताओं का एक अलग वर्ग बन जायेगा। हालांकि कोर्ट ने ईडी की एक न सुनी और अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत देकर यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय लोकतंत्र को किंतु-परन्तु के आधार पर नहीं, बल्कि स्पष्ट और पारदर्शी नीतियों के आधार पर ही चलाया जाएगा। संभव है कि अगली संसद इससे सबक लेगी और नेताओं के लिए आवश्यक कानून बनाएगी या फिर पूर्व की विसंगतियों को दूर करेगी। यह स्वाभाविक सवाल है कि जब चुनावी मौसम हो और दल विशेष का प्रमुख नेता ही जेल में हो तो उसकी पार्टी को सही जनादेश कैसे मिल पाएगा। शायद इसलिए कोर्ट ने अंतरिम जमानत की नई राह दिखा दी और सियासी नकेल अपने हाथों में रख ली।

-कमलेश पांडेय-

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही

दिनांक 1 मई, 2024 को अप्रैल, 2024 माह में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के संग्रहण से संबंधित जानकारी जारी की गई है। माह अप्रैल 2024 के दौरान जीएसटी का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रु पये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्त वर्ष 2022 में जीएसटी का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रु पये रहा था, जो वित्त वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ हो गया एवं वित्त वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रु पये के स्तर को पार कर गया।अब तो अप्रैल, 2024 में 2.10 लाख करोड़ रु पये के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रु चि बढ़ी है, अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में हिचकिचाहट रहती थी और अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी, परंतु केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित रिकार्ड बना रहा है।वैश्विक स्तर पर विदेशी प्रेषण के मामले में भारत प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। भारत में सबसे बड़ा सिंक्रोनाईजड बिजली ग्रिड है। बैंकिंग क्षेत्र में वास्तविक समय लेन देन की सबसे बड़ी संख्या आज भारत में ही संपन्न हो रही है। भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा स्टील उत्पादक देश है एवं विश्व में मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता बन गया है। भारत में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेट्वर्क है। मात्रा की दृष्टि से भारत में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा फार्मास्यूटिकल्स उद्योग है।भारत में विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मेट्रो नेट्वर्क है। भारत ने स्टार्टअप विकसित करने के उद्देश्य से विश्व का तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा कर लिया है। भारत का स्टॉक बाजार, पूंजीकरण के मामले में विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है। भारत में विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेट्वर्क है। विश्व में पैटेंट के लिए आवेदन किए जाने वाले देशों में भारत छठे स्थान पर आ गया है। 10 वर्षो के दौरान शेयर बाजार में निवेशकों को अपार सफलता हासिल हुई है और सेंसेक्स ने 200 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की है। निफ्टी ने भी इसी अवधि में 206 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की। यह स्थानीय एवं विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर विश्वास जता रहा है। भारत में शेयर बाजार में व्यवहार करने के उद्देश्य से खोले जाने वाले डीमेट खातों की संख्या 2014 में 2.2 करोड़ थी जो 2024 में बढ़कर 15.13 करोड़ हो गई है अर्थात 10 वर्षो में 7 गुणा से अधिक। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में भी काफी सुधार हुआ है।भारतीय नागरिकों में आज स्व का भाव जगाने में भी कामयाबी मिली है, जिसके चलते स्वदेश निर्मित वस्तुओं का उपयोग बढ़ रहा है एवं अन्य देशों से विभिन्न उत्पादों के आयात कम हो रहे हैं। इसके चलते भारत के विदेशी व्यापार घाटे में सुधार दृष्टिगोचर है। भारत से विभिन्न उत्पादों के निर्यात में भी मामूली वृद्धि दर्ज हो रही है। भारत में नागरिक का औसत जीवन 2022 के 62.7 वर्ष से बढ़कर 67.7 वर्ष हो गया है, जो स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के चलते ही संभव हो सका है। संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदन के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में पिछले 12 महीनों के दौरान 6.3 प्रतिशत की वृद्ध दर्ज हुई है। एक सर्वे के अनुसार, आज भारत में 36 प्रतिशत कंपनियां आगामी 3 माह में नई भर्तियां करने पर गंभीरता से विचार कर रही हैं, इससे में रोजगार के लाखों अवसर निर्मित होते दिखाई दे रहे हैं। गरीब वर्ग को भी केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचाए जाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं।जल जीवन मिशन ने पूरे भारत में 75 प्रतिशत से अधिक घरों में नल के पानी का कनेक्शन प्रदान करके मील का पत्थर हासिल कर लिया है। लगभग 4 वर्षो के भीतर मिशन ने 2019 में ग्रामीण नल कनेक्शन कवरेज को 3.23 करोड़ घरों से बढ़ाकर 14.50 करोड़ से अधिक घरों तक पहुंचा दिया गया है। पीएम आवास योजना के अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 4 करोड़ से अधिक पक्के मकान बनाए गए हैं।

-प्रह्लाद सबनानी-

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

मिल जाएं भोले

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी राम
गांधीनगर,इन्दौर,मध्यप्रदेश

भाग रही है दुनिया देखो,
यहां-वहां के फेरों में,
मैं तो कहता घर प्यारा है,
नजर झुकाकर देखो तो।
भाग रही है ...
मैं जीवन की भूल-भुलैया,
में जब खोया होता हूं,
बस भोले का नाम लिया तो,
चैन की नींद मैं सोता हूं।
भाग रही है ...
प्रेम का प्याला मैंने पीकर,
खुशियों का अंबार भरा,
भोले के दर्शन से मैंनें,
जीवन का श्रंगार किया।
भाग रही है ...
जितनी कटी है बस भोले की,
और बची वो भोले की,
एक आस है मिल जाएं भोले,
यही कामना जीवन की।
भाग रही है ...
सुबह शुरू हो भोले से,
निशा अंत हो भोले से,
मन भोले हो तन भोले हो,
जीवन की हर रुत भोले।
भाग रही है ....

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

मसला ताज होटल का

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

ताज होटल को बनने में करीब 14 साल लगे थे और साल 1903 में गेस्ट के लिए खोला गया था। ताज होटल साल 1903 में खुला था। इसकी नींव जमशेदजी टाटा ने डाली थी। साल 1889 में टाटा ग्रूप के संस्थापक जमशेदजी टाटा ने अचानक ऐलान किया कि वे बॉम्बे (अब मुंबई) में एक भव्य होटल बनाने जा रहे हैं।जमशेदजी टाटा ने जब ताज होटल बनाने का ऐलान किया तो उनके परिवार में ही फूट पड़ गई। टाटा की बहनें उनका विरोध करने लगीं। लेखक हरीश भट पेंगुइन (हिंद पॉकेट बुक्स) से प्रकाशित अपनी किताब 'टाटा स्टोरीज' में लिखते हैं कि जमशेदजी टाटा की एक बहन ने गुजराती में कहा, 'आप बैंगलोर में साइंस इंस्टिट्यूट बना रहे हैं, लोहे का कारखाना लगा रहे हैं और अब कह रहे हैं कि भतारखाना (होटल) खोलने जा रहे हैं'? हरीश भट लिखते हैं कि जमशेदजी टाटा के दिमाग में बॉम्बे में भव्य होटल बनाने का आइडिया यूं ही नहीं आया था, बल्कि इसके पीछे एक कहानी और बदले की आग थी। उन दिनों में बॉम्बे के काला घोड़ा इलाके में स्थित वाटसन्स होटल सबसे नामी हुआ करता था, लेकिन वहां सिर्फ यूरोप के लोगों को प्रवेश मिलता था। एक बार जमशेदजी टाटा वहां पहुंचे तो उन्हें यूरोपियन न होने के चलते एंट्री नहीं मिली। यह बात उनके दिल में बैठ गई थी। इसके अलावा उन दिनों बॉम्बे में एक भी ऐसा होटल नहीं था जो यूरोप या पश्चिमी देशों का मुकाबला कर सके। भट लिखते हैं कि जमशेदजी टाटा अक्सर अमेरिका, यूरोप और पश्चिमी देशों की यात्रा किया करते थे और वहां होटल और दूसरी सुविधाओं को देखा था। साल 1865 में 'सैटरडे रिव्यू' में एक लेख छपा, जिसमें लिखा गया था कि बॉम्बे को अपने नाम के अनुरूप अच्छा होटल कब मिलेगा? यह बात भी टाटा के दिल को लग गई थी।जमशेदजी टाटा, ताज होटल के लिए सामान खरीदने दुनिया के कोने-कोने तक गए। लंदन से लेकर बर्लिन तक के बाजार खंगाल डाले। ताज होटल भारत का ऐसा पहला होटल था जहां कमरों को ठंडा रखने के कार्बन डाइऑक्साइड बर्फ निर्माण संयंत्र लगाया गया था। होटल के लिए लिफ्ट जर्मनी से मंगवाई गई थी, तो पंखे अमेरिका से आए थे। हॉल के बाल रूम में लगाने के लिए खंभे पेरिस से आए थे। उन दिनों ताज होटल की कुल लागत 26 लाख रुपये तक पहुंच गई थी। आखिरकार साल 1903 में जब ताज होटल खोला गया तब इसके कमरों का किराया 6 रुपये प्रति दिन रखा गया। यह लगभग और होटलों के बराबर ही था। लेकिन पहले दिन होटल में महज 17 गेस्ट पहुंचे। आने वाले कुछ दिनों तक स्थिति लगभग ऐसी ही रही। ताज होटल के खर्चों ने जमशेदजी के सामने आर्थिक संकट खड़ा कर दिया। कुछ लोग इसे जमशेदजी का सफेद हाथी तक कहने लगे पर ये कुछ अरसे की बात थी।बाद में ताज ने हॉस्पिटिलिटी की दुनिया में डंका बजा दिया। हम जैसे हजारों नही लाखों लोग जो आज ताज में रुकना तो दूर कॉफी शॉप में एक काफी बमुश्किल अफर्ट कर सकते है,वो जब भी मुंबई जाते है तो ताज के सामने खड़े हो एक तस्वीर खींच अपनी हसरत पूरी कर लेते है।मुंबई में हुए आतंकी हमले का निशाना ये होटल भी बना...

राजशेखर ने सृष्टि को दिखाई दृष्टि

हेमेन्द्र क्षीरसागर
बालाघाट, मध्यप्रदेश

दृढ निश्चय, पक्का इरादा हो तो दुनिया का कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है। इसमें कोई आतिशोव्यक्ति नहीं है। बस जिस दिन ठान लेंगे, समझो मंजिल हासिल कर ली। बाकी रहेगी तो बस तारीख। ऐसे कई उदाहरण और जज्बे हमारे सामने है। जिनको दुनिया सलाम करती है। विपदा में समाधान ढूंढना कोई ऐसी कर्मवीरों से सीखे। मिसाल के तौर पर अक्षरशऱ्शब्द! ÷ हैदराबाद में मेरा कोचिंग सेंटर घर से बहुत दूर था और मुझे सुबह छह बजे से पहले बस पकड़नी होती थी। आज मैं उन सभी हाथों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो मेरे सहारे के लिए आगे बढ़े, जिन्होंने मुझे सड़क पार करने में मदद की। मेरी सफलता में उन सबका हाथ है। - चाटर्ड एकाउंटेंट जे. राजशेखर रेड्डी।

हालिया, आंध्र प्रदेश के रहने वाले जे. राजशेखर रेड्डी भारत के ऐसे पहले सीए हैं, जो बिलकुल भी देख नहीं सकते। राजशेखर जन्म से दृष्टिहीन नहीं थे; सिर में हुए एक ट्यूमर से ऑप्टिकल नर्व डैमेज के कारण 11 वर्ष की आयु में उनकी आंखों की रौशनी चली गई थी। गुंटूर में रहने वाले राजशेखर उन दिनों को याद करते हुए कहते हैं, ÷जब मैं कुछ भी देखने के काबिल नहीं रहा तो मुझे लगा कि ÷अब मेरे जीवन का अंत हो गया है। मैंने कभी आत्महत्या की बात तो नहीं सोची लेकिन मेरा जीवन निराशा में डूब गया था।

प्रसंग, मैं एक साल तक घर में किसी पत्थर की तरह पड़ा रहा। मेरे माता-पिता मुझे देख कर रोते थे और कहते थे कि काश वे मेरे लिए कुछ कर सकते।÷ यही आंसू राजशेखर के लिए प्रेरणास्रोत बन गए। इसके बाद हैदराबाद का देवनार फाउंडेशन, जो देश में दृष्टिहीन बच्चों का पहला इंग्लिश मीडियम स्कूल था, राजशेखर का नया घर बन गया। देवनार फाउंडेशन के संस्थापक और आँखों के मशहूर डॉक्टर पद्मश्री साई बाबा गौड़ कहते हैं. ÷जब राजशेखर रेड्डी हमारे पास आया था तो 11 साल का बच्चा था। लेकिन उसकी योग्यता, कड़ी मेहनत और संकल्प को देखकर हर कोई प्रभावित था।

स्तुत्य, दसवीं कक्षा के बाद जब राजशेखर ने एक चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने की इच्छा जताई तो सभी को यह असंभव लगा लेकिन परिवार और करीबियों ने उनका समर्थन किया। उन्होंने ऑडियो बुक्स की मदद से अपनी तैयारी की। राजशेखर का कहना है, ÷मैं दुनिया को बताना चाहता हूँ कि दृष्टिहीन लोग न केवल शिक्षा में सफल हो सकते हैं, बल्कि काम के मैदान में भी वह दूसरों से ज़्यादा अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।÷ नतीजा देखिए आज राजशेखर ने चार्टर्ड एकाउंटेंट जैसी कठिनतम परीक्षा पास कर सृष्टि को दृष्टि दिखाई।

निश्चित ही राजशेखर के अद्भुत समर्पण ने जीवन की नई राह दिखाई है। इनके परिश्रम से यह सिद्ध हो गया दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है। राजशेखर का सबक उन लोगों के लिए खास मायने रखता है जो सब कुछ होने के बावजूद बहाने बाजी में अपनी किस्मत को दोष देते फिरते हैं। याद रहे! किस्मत भी बहादुरों का साथ देती है कायरों का नहीं। आईए राजशेखर के प्रेरक कर्मयोग से सीख लेकर अपने कर्तव्य पथ पर ईमानदारी से आगे बढे। तो हम देखेंगे सफलता भी हमारे कदम चूमेगी।

प्रणाम और साभार! कथित कथन जे. राजशेखर रेड्डी, सीए।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

मां

मोनिका डागा आनंद ,
चेन्नई ,तमिलनाडु

जीवन में कोई खुशी हो या गम,
जिसे ढूंढता मन हरदम,
जन्मदात्री, रक्षक, पालन हारी,
मेरे जीवन बगिया की फुलवारी ।
मेरा पहला स्पर्श वो ही प्यार है,
मां दुआओं से मिला उपहार है,
सीखाती हमें प्यार की परिभाषा,
पूरी करती हमारी हर अभिलाषा ।
देती वो दिन रात मुझे अनंत दुआ,
मुस्कुराती जब वो,
दर्द मेरा छूमंतर हुआ,
मां वात्सल्य का अनुपम सागर,
धन्य हूं ईश्वर तुझे
इस रूप में पाकर ।
आशीर्वाद से मां के
होता हर लक्ष्य पूरा,
बिना जिसके जीवन है अधूरा,
मां ने मुझे आनंद
अमृत कलश दिया,
पूजनीय महतारी !
तेरा लख-लख शुक्रिया ।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

तेरे चरणों मे माँ तीरथ द्वार है

अशोक पटेल आशु
शिवरीनारायण छत्तीसगढ़

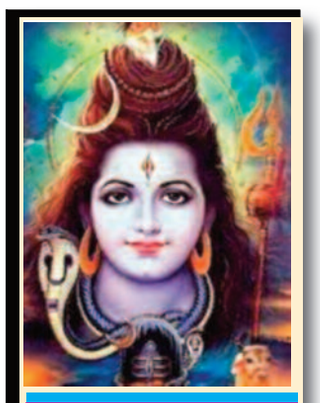

माँ मैं कहाँ जाऊं, कहाँ भटकूँ
तेरे चरणों मे ही तीरथ द्वार है,
सारे देवता हैं माँ तेरे चरणों मे
नमन करूँ तुझको बारम्बार है।
करूँ स्तुति मैं, करूँ आराधना
करूँगा मैं तेरा,नित गुणगान है,
जग में है माँ तेरी पावन महिमा
माँ तू ही इस जगत में महान है।
तुम ही हो जग की जन्मधात्री
तुम ही तो हो पहिली गुरुमाता,
तुम हो शक्ति माँ देवी स्वरूपा
तुम ही तो हो माँ सृजन-कर्ता।
तुम ही तो हो माँ वात्सल्यमयी
तुम ही माँ ममता की खान हो,
तुमसे बढ़कर जग में कोई नही
तुम ही देती सबको वरदान हो।
माँ तुम हो सबकी पालनहारी
और तुम ही हो दया की मूर्ति,
तेरे बिना सब यह जग है सुना
तुझसे यह धरा-धाम सँवरती।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

निस्तार प्रभावित होने पर ग्रामवासियों ने दी उग्र विरोध की चेतावनी,हाउसिंग बोर्ड के अधिकारी पीछे हटे

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024
(घटती-घटना)।

शहर से लगे ग्राम सरगंवा में ग्रामीणों की निस्तार की भूमि पर हाउसिंग बोर्ड द्वारा मिट्टी पाटने से ग्रामीणों और हाउसिंग बोर्ड के अधिकारियों के बीच एक बार फिर तनाव की स्थिति की बन गई है। जिला पंचायत सदस्य राकेश गुप्ता की पहल पर फिलहाल मामला शांत है। निस्तार प्रभावित होने पर ग्रामवासियों ने उग्र विरोध की चेतावनी भी दी है।

अंबिकापुर जनपद पंचायत अंतर्गत ग्राम पंचायत सरगंवा में हाउसिंग बोर्ड कालोनी प्रबंधन और ग्रामवासियों में रास्ते और निस्तार की जमीन को लेकर करीब सात साल से विवाद है। 2017-18 में राजस्व विभाग,हाउसिंग बोर्ड,जनप्रतिनिधियों और ग्रामवासियों के बीच कालोनी के बीच से रास्ता देने और निस्तार ना रोकने के सम्बंध

में सहमति बनी थी। पिछले कई दिनों से हाउसिंग बोर्ड कालोनी का निर्माण कर रहे ठेकेदार द्वारा कालोनी की बाउंड्रीवाल के पीछे बरसाती नाला को मिट्टी भरकर पाटा जा रहा था। लगातार ग्रामीणों के विरोध के बाद भी काम जारी था। नाला को पाटने के लिए पिछले दो दिनों से कई ट्रक खराब हो चुके बीड़ी पत्ता को फेंका जा रहा है जो कि सड़ कर बदबू का कारण बन रहा है। आज सरगंवा के लोगो ने पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मिल कर काम को रोक दिया। जिससे विवाद की स्थिति बन गयी। ग्रामीणों के बुलावे पर जिला पंचायत सदस्य राकेश गुप्ता ने ग्रामीणों और हाउसिंग बोर्ड अधिकारियों के बीच सुलह का प्रयास किया। उन्होंने पंचायत को अपनी भूमि सुरक्षित करने कहा। यह भी आश्वस्त किया कि पूर्व में हुई सहमति के अनुसार बोर्ड को ग्रामीणों के निस्तार के लिए 20 फिट चौड़ा रास्ता देना ही होगा। फिलहाल तो मामला शांत है मगर ग्रामीणों ने श्मशान भूमि और निस्तारी नाले पर से कब्जा नही हटाने पर उग्र विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इधर हाउसिंग बोर्ड में मकान लेने वालों ने कालोनी में नियमानुसार बाउंड्री वॉल बनाने का दबाव बोर्ड पर बना रहे हैं।

जंगल से भटका हिरण गांव के कुंए में गिरा, वन विभाग और ग्रामीणों ने किया रेस्क्यू

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)।

वाड्रफनगर फॉरेस्ट रेंज में एक हिरण जंगल से भटककर गांव में पहुंच गया. लेकिन गांव के पास आते ही हिरण गहरे कुएं में जा गिरा. स्थानीय ग्रामीणों ने आवाज आने पर जाब कुंए में गिरे हिरण को देखा, तो तत्काल

इसकी सूचना वन विभाग को दी. जिसके बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और ग्रामीणों के मदद से हिरण का रेस्क्यू कर उसे कुंए से बाहर निकाला। हिरण का इलाज कर उसे जंगल में छोड़ दिया है। वाड्रफनगर फॉरेस्ट रेंज में वन विभाग की टीम को ग्रामीणों से सूचना मिली कि एक हिरण जंगल से भटककर गांव के पास के कुएं में गिर गया है. सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से कुंए में उतरे. टीम ने एक रस्सी से हिरण को बांधा, जिसके बाद हिरण को खीचकर कुएं से बाहर निकाला गया. हिरण का वन विभाग ने इलाज कराया और फिर जंगल में छोड़ दिया। जंगल की आग से बचने भटक रहे वन्य प्राणी गर्मी के मौसम में लगातार जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ जाती है, जिससे बचने के लिए वन्य जीव गांव की बस्तियों और रिहायशी इलाकों तक पहुंच जाते हैं. गर्मी में जंगलों में पानी के सभी स्त्रोत भी सूख जाते हैं. कभी कभी पानी की तलाश में भी वन्य प्राणी जंगल से भटककर गांव में पहुंच जाते हैं।

गोदाम से एलईडी टीवी चोरी करने के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024
(घटती-घटना)।

व्यवसायी के गोदम से दो नग एलईडी चोरी करने के मामले में गांधीनगर पुलिस ने चोर व खरीदार को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार बसंत पाठक सुभाषनगर का रहने वाला है और होली क्रॉस स्कूल के पीछे ममता सेल्स फर्म इलेक्ट्रॉनिक गोदाम में मैनेजर है। पिछले दिनों गोदाम में रखे एलईडी टीबी के स्टॉक का मिलान किया तो कम पाया गया। वह गोदाम में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज जांच की। जांच में पता चला कि 18 अप्रैल को एक व्यक्ति गोदाम से चोरी कर दो नग एलइडी टीवी गोदाम से चोरी कर पीकअप वाहन क्रमांक यूपी 64 बीटी7573 से ले गया है। मैनेजर ने मामले की रिपोर्ट गांधीनगर थाना में दर्ज कराई थी। रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने आरोपी सुकेश कुमार नायक उम्र 30 वर्ष तुर्रापानी गांधीनगर, मूल निवासी मुकाम दर्रीपारा कुसमी बलरामपुर को गिरफ्तार किय है। आरोपी ने उक्त एलइडी टीबी को चोरी कर सत्तीपारा स्थित इलेक्ट्रॉनिक दुकान के संचालक आदित्य शर्मा को 15 सौ रुपए में बेच दिया था। पुलिस ने मामले में दोनों आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के कब्जे से चोरी की एक-एक नग एलईडी टीवी व घटना में प्रयुक्त पिकअप वाजन जब्त किय है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। कार्रवाई में थाना प्रभारी गांधीनगर निरीक्षक अश्वनी सिंह, सहायक उप निरीक्षक विनय सिंह, महिला आरक्षक त्रिलोचनी राजवाड़े, आरक्षक ऋषभ सिंह, घनश्याम देवांगन, अरविन्द उपाध्याय, बृजेश राय, अनिल परिहार शामिल रहे।

दो नग चोरी की बाइक के साथ आरोपी गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024
(घटती-घटना)।

चोरी की दो बाइक के साथ मणिपुर पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी उक्त दोनों बाइक को जिला अस्पताल से चोरी की थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार महादेव ग्राम अमलभिट्ठी थाना दरिमा का रहने वाला है। वह 11 मई को बाइक क्रमांक सीजी 04 डीवी 9132 से परिजन से मिलने जिला अस्पताल आया था। यहां से उसकी बाइक को अज्ञात चोर द्वारा चोरी कर ली गई थी। वह मामले की रिपोर्ट मणिपुर थाना में दर्ज कराई थी। इसी तरह महामाया रोड जरहागढ़ निवासी समीर खान 11 मई को बाइक क्रमांक सीजी 15 डीएम 6864 से जिला

अस्पताल आया था। वह भी अपनी बाइक को अस्पताल परिसर में खड़ा कर भर्ती मरीज से मिलने गया था। इसी बीच अज्ञात चोर द्वारा बाइक चोरी कर ली गई थी। वह भी मामले की रिपोर्ट मणिपुर थाना में दर्ज कराई थी। दोनों मामले में पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ अपराध दर्ज कर आरोपी की तलाश कर रही थी। इसी बीच पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आरोपी छोटू चौधरी (23) निवासी हाथी पखनापारा महामाया पहाड़ थाना कोतवाली को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो वह दोनों बाइक चोरी करने की बात स्वीकार की और अपने घर में छुपाकर रखने की बात स्वीकार की। आरोपी उक्त दोनों बाइक को बेचने के लिए ग्राहक की तलाश कर रहा था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। कार्रवाई में थाना प्रभारी मणीपुर निरीक्षक प्रदीप जायसवाल,सहायक उप निरीक्षक नवल किशोर दुबे,सहायक उप निरीक्षक विवेक पाण्डेय,प्रधान आरक्षक पीताम्बर सिंह,आरक्षक अतुल कुमार शर्मा,सत्येंद्र दुबे,संजीव चौबे,राहुल सिंह,अमित विश्वकर्मा शामिल रहे।

यातायात नियमों के उल्लंघन करने वालों पर सरगुजा पुलिस की कार्रवाई जारी,141 लोगों से वसूले गए 83 हजार रुपए समन शुल्क

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)।

यातायात नियमों के उल्लंघन करने वालों पर सरगुजा पुलिस द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। शनिवार की शाम को शहर के 6 स्थानों पर प्वाइंट लगाए गए थे। इस दौरान कार्रवाई के लिए 50 से अधिक पुलिस अधिकारी-कर्मचारी तैनात किए गए थे। कुल 141 प्रकरण में 83 हजार

रुपए समन शुल्क वसूले गए हैं। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन से बात करने के मामले में 14 लोगों पर कार्रवाई की गई है। इन से 42 सौ रुपए समन शुल्क वसूले गए हैं। कार्रवाई के दौरान मौके पर दस्तावेज प्रस्तुत नहीं करने वाले 24 वाहन चालकों से 72 सौ रुपए समन शुल्क वसूले गए हैं। असंवैधानिक पार्किंग के मामले में 3 प्रकरण में 11 सौ रुपये, दोपहिया वाहन में तीन सवारी के मामले में 7 लोगों से 35 रुपये, खतरनाक तरीके से वाहन चलाने के मामले में 4 लोगों से 8 हजार रुपए, सार्वजानिक सेवा के वाहनों में वाहन चलाते समय निर्धारित ड्रेस ना पहनने के मामले में 3 वाहन चालकों से 9 सौ रुपए व यातयात नियमों की अवहेलना करने वाले 31 वाहन चालकों से 40 हजार रुपए समन शुल्क वसूले गए हैं।

मौसम की मार झेल रहा छत्तीसगढ़ का हरा सोना

तेंदूपत्ता और साल बीज की गुणवत्ता हो रही प्रभावित

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024
(घटती-घटना)।

अंबिकापुर वनों की गौण उपज में तेन्दूपत्ता का विशिष्ट स्थान है। तेन्दूपत्ता एक प्राकृतिक रुप से उत्पन्न होने वाला पौधा है। इसके पत्तों से बीडी बनायी जाती है।छत्तीसगढ़ में हरा सोना के नाम से पहचाना जाने वाला तेंदूपत्ता और साल बीज पर इस बार मौसम की मार पड़ी है। विक्षोभ के कारण आंधी-तूफान और बारिश से तेंदूपत्ता की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। तेज हवाओं के कारण पकने से पहले ही साल बीज झड़ रहे हैं। इसका सीधा असर ग्रामीणों की आजीविका पर पड़ रहा है।

उत्तर छत्तीसगढ़ में 09 मई से तेंदूपत्ता की खरीदी आरंभ हो गई है लेकिन उच्च गुणवत्ता की तेंदूपत्ता संग्रहण केंद्रों में नहीं पहुंच रही है। जितनी तेज गर्मी पड़ती है तेंदूपत्ता की गुणवत्ता उतनी ही बेहतर होती है लेकिन इस बार उत्तर छत्तीसगढ़ में प्रतिकूल मौसम के कारण तेंदूपत्ता की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा है। संग्राहकों को इसका सीधा नुकसान उठाना पड़ रहा है। इस बार सरगुजा जिले के सभी 14 समिति तथा बलरामपुर जिले की 64 समितियों में तेंदूपत्ता फडों में ठेके के माध्यम से खरीदी होनी है। तेंदूपत्ता ठेकेदारों ने इस बार रुचि दिखाई थी लेकिन मौसम के कारण खरीदी प्रभावित हो रही है। इसका सीधा नुकसान तेंदूपत्ता संग्राहकों को हो रहा है। प्रचंड गर्मी में चारा पानी की तलाश में हाथी और भालू भी विचरण कर रहे हैं। खरीदी आरंभ होने के साथ ही सरगुजा जिले के उदयपुर वन परिक्षेत्र में तेंदूपत्ता तोड़ने गए दो लोगों पर भालू ने हमला कर जख्मी कर दिया है। इससे संग्राहक परिवार भयभीत भी हैं। उत्तर छत्तीसगढ़ में जंगली हाथियों का विचरण भी इस सीजन में आबादी क्षेत्रों के आसपास होता है इस कारण तेंदूपत्ता संग्रहण कार्य भी प्रभावित है। भोर में जिस समय हाथी, जंगलों की ओर लौटते हैं उसी समय तेंदूपत्ता संग्राहकों को जंगल जाना पड़ता है यही कारण है कि सतर्कता भी बेहद जरूरी है। उत्तर छत्तीसगढ़ में गर्मी के सीजन में असिंचित क्षेत्रों में खेती नहीं होती। हरा सोना के नाम से ख्याति प्राप्त तेंदूपत्ता ग्रामीण अर्थव्यवस्था और आजीविका संवर्धन का प्रमुख साधन होता है, यही कारण है कि आदिवासी परिवार के सदस्य भोर में ही तेंदूपत्ता तोड़ने निकल जाते है। 12 बजे से पहले घर लौटकर परिवार के सभी सदस्य तेंदूपत्ता की गड्डी बनाते हैं। शाम को नजदीकी फड़ में इसकी बिक्री की जाती है। तेंदूपत्ता तोड़ने से लेकर इसकी बिक्री करने तक की प्रक्रिया में परिवार के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहता है।

छत्तीसगढ़ में तेंदूपत्ता की खरीदी 5,500 रुपये प्रति मानक बोरे की दर से

छत्तीसगढ़ में तेंदूपत्ता की खरीदी 5,500 रुपये प्रति मानक बोरे की दर से की जानी है। भाजपा सरकार ने इसका दर बढाया है।पिछली कांग्रेस सरकार में तेंदूपत्ता की खरीदी 4,000 रुपये प्रति मानक बोरे की दर से होती थी। वर्ष 2024 से तेंदूपत्ता संग्रह करने वालों से 5,500 रुपये प्रति मानक बोरे की कीमत पर खरीद करने का फ़ैसला लिया गया है। सरगुजा वनवृत्त में पिछले वर्ष के बराबर तीन लाख 63 हज़ार 600 मानक बोरा तेंदूपत्ता संग्रहण का लक्ष्य रखा गया है। तेंदूपत्ता की एक गड्डी में 500 पत्ते होते हैं। संग्राहक परिवारों के लिए शासन स्तर से कई योजनाएं भी संचालित की जाती है। सरकार ने फिर से चरण पादुका देने का भी निर्णय लिया है।

माँ और संतान के बीच होता है सबसे निश्छल और पवित्र रिश्ता

» अंतर्राष्ट्रीय मातृत्व दिवस पर सरगुजा पुलिस द्वारा रेंज स्तर मातृत्व सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024
(घटती-घटना)।

अंतर्राष्ट्रीय मातृत्व दिवस के अवसर पर रविवार को कामोदा विहार में सरगुजा पुलिस द्वारा रेंज स्तर मातृत्व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आईजी अंकित गर्ग रहे। इस दौरान अपना सर्वस्व न्योछावार कर उच्च बलिदान देने वाले वीर शहीद जवानों की माताओं ने कार्यक्रम के दौरान अपने शहीद सपूतों को याद किया। इस दौरान कार्यक्रम में शहीद परिवार की माताओं को शाल श्रीफल देकर सम्मनित किया गया। साथ ही शिक्षा एवं खेलकूद में अव्वल आए पुलिस परिवारों के बच्चों की माताओं को भी सम्मानित किया गया। शहीद आरक्षक अमरदीप खलखो की माता अनिमा खलखो ने कहा कि उनका परिवार काफी कठनाई में भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी, शहीद आरक्षक अमरदीप खलखो ने अपने युवा अवस्था में पुलिस विभाग में अपनी सेवा देने की इच्छा जताई थी, जिस पर परिवार ने सहमति दी, पुलिस विभाग में भर्ती होने के बाद मेरे बच्चे की पोस्टिंग सुकमा में हुई। सेवा के दौरान नक्सली मुठभेड़ में 21 मार्च 2020 को वीर शहीद अमरदीप खलखो ने सर्वोच्च बलिदान देकर शहीद हुए, मैंने उस परिस्थिति में भी हिम्मत रखकर आज इस कार्यक्रम में शामिल हुई हूं। शहीद परिवार को आप जैसे कई पुत्र मिले हैं जो हमें हर समय याद करते हैं।

आईजी अंकित गर्ग ने अंतर्राष्ट्रीय मातृत्व दिवस के अवसर पर कहा कि मातृत्व दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सरगुजा रेंज से आए हुए सभी पुलिसकर्मियों के परिवारों का स्वागत एवं सम्मान करता हू, मां और उनके मातृत्व के सम्मान के लिए किसी विशेष दिन की आवश्यकता नहीं हैं। मां कि भूमिका बताने के लिए शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं हैं, माँ और संतान के बीच सबसे निश्छल और पवित्र रिश्ता होता है, जो दुनिया में सबसे अनमोल और खूबसूरत है। मशहूर चित्रकार लियोनार्डो ने कहा था मां एक जीता जगता चमत्कार हैं, और ये चमत्कार भगवान ने मां के रूप में अपने बच्चों के लिए भेजा है। पुलिस विभाग में ड्यूटी की कोई सीमा नहीं है। 24 घंटे ड्यूटी होती है, पुलिस परिवार के सदस्य जानते हैं कि ड्यूटी कितनी कठिन है। पिता विभाग के कार्यों एवं अन्य सेवा में तैनात रहते हैं। उस स्थिति में मां को पिता के कर्तव्यों का भी निर्वहन करना पड़ता है। ऐसे सुखद दिन में आप सभी माताओं का सम्मान करना गर्व की बात है। एसपी विजय अग्रवाल ने कहा कि 1914 में विश्व मातृत्व दिवस कि शुरुवात हुई है। तब से आज तक लगातार विश्व मातृत्व दिवस मनाया जा रहा है। मातृत्व दिवस पर या अन्य दिनों में भी मां के बारे में कुछ भी बताने या अभिव्यक्त करने की अवश्यकता नहीं है। घर पहली पाठशाला और मां उस पाठशाला की प्रधानपाठक होतीं हैं। जहां से हम इस दुनिया की पहली परिचय प्राप्त करते हैं, माँ की वजह से ही प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सर उठकर जीते हैं। आज इन्हीं माताओं की वजह से पुलिस परिवार के बच्चे आगे बढ़ रहे हैं। पुलिस विभाग को गौरवान्वित कर रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान संभागीय सेनानी राजेश पाण्डेय,पुलिस अधीक्षक पीटीएस मैनपाट सचिन्द्र चौबे,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अमोलक सिंह ढिल्लों,नगर पुलिस अधीक्षक रोहित कुमार शाह, प्रशिक्षु उप पुलिस अधीक्षक शुभम तिवारी, कार्यक्रम संयोजक सुरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष डॉ. इति चतुर्वेदी हार्मोनी सेवा समिति, संतोष वर्मा, सुजित चतुर्वेदी सहित सरगुजा रेंज के समस्त जिलों से आए पुलिस परिवार की माताएं एवं सदस्य, सहित काफी संख्या में पुलिस अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

CMYK

बाल्टीमोर पुल हादसा:जहाज से मलबा हटाने के लिए विस्फोट करने की तैयारी,मार्च से फंसे हैं 20 भारतीय क्रू सदस्य

वॉशिंगटन,12 मई 2024। बाल्टीमोर ब्रिज हादसे को हुए करीब दो महीने का समय होने वाला है, लेकिन अभी तक जहाज नदी में ही फंसा हुआ है। दरअसल जहाज डाली पर पुल का मलबा पड़ा हुआ है, जिसे अभी तक हटाया नहीं जा सका है। अब जहाज से मलबा हटाने के लिए नियंत्रित विस्फोट कराने की तैयारी है।

नियंत्रित विस्फोट कराकर मलबा हटाने की तैयारी

जहाज से मलबा हटाने में जुटी टीम ने मलबे में नियंत्रित तरीके से विस्फोट कराने की तैयारी शुरू कर दी है। इसके तहत जहाज पर पड़े मलबे में छोटे-छोटे विस्फोटक लगाकर मलबे को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाएगा, जिसके बाद मलबे को हटाना आसान होगा। उल्लेखनीय है कि 26 मार्च को बाल्टीमोर का 2.6 किलोमीटर लंबा फ्रांसिस स्कॉट पुल

एक शिपिंग जहाज डाली से टकराकर तबाह हो गया था। पुल का मलबा जहाज डाली पर पड़ा हुआ है, जिसके न हटने की वजह से जहाज वहीं पर फंसा हुआ है।

जहाज पर फंसे हैं 20 भारतीय क्रू सदस्य

डाली जहाज पर मौजूद क्रू में 20 भारतीय और एक श्रीलंकाई नागरिक शामिल है। हादसे के बाद से ही क्रू के सभी सदस्य जहाज पर ही फंसे हैं और जांच में सहयोग कर रहे हैं। हालांकि मलबे को छोटे टुकड़ों में तोड़ने के लिए नियंत्रित विस्फोट की प्रक्रिया कब की जाएगी, इसकी जानकारी नहीं दी गई है। साल 2023 में मैरीलैंड के चार्ल्स काउंसी इलाके में भी एक पुराने पुल को तोड़ने में भी नियंत्रित विस्फोट का इस्तेमाल किया गया था। बाल्टीमोर ब्रिज हादसे की अमेरिकी सरकार आपराधिक जांच कर रही है। इसके तहत क्रू सदस्यों से पूछताछ भी की गई है।

छात्र ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

- संवाददाता -
सूरजपुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के जयनगर थाना अंतर्गत कक्षा 12 वीं में पढ़ने वाले एक छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। आत्महत्या से पूर्व युवक ने अपने मोबाइल की वीडियो रिकॉर्डिंग भी ऑन रखी थी। सोशल मीडिया पर यह वीडियो वायरल हो रहा है। मामला प्रेमप्रसंग का बताया जा रहा है।

मिली जानकारी अनुसार जयनगर थानांतर्गत ग्राम महावीरपुर के अजिरमा निवासी अखिलेश ठाकुर 17 वर्ष का एक युवती से प्रेम प्रसंग था। वह युवती के साथ घर से भागना चाहता था,लेकिन उसने मना कर दिया। युवती दूसरे जाति की थी और वह आगे पढ़ना चाहती थी,मना करने क्षुब्ध हो अखिलेश ने फांसी लगा ली। परिजनों ने देखा तो फंदे से उतारकर अंबिकापुर अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की सूचना पर गांधीनगर थाना पुलिस ने मर्ग कायम किया है। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। शाम को जब पुलिस ने युवक के मोबाइल की जांच की तो खुदकुशी का वीडियो सामने आया। मृतक ने मरने से पूर्व फांसी लगाने का पूरा वीडियो रिकार्ड ऑन कर किया है।

भाइयों में सबसे छोटा था मृतक

मृतक अखिलेश अजिरमा हायर सेकेंडरी स्कूल में पढ़ता था। वह तीन भाइयों में सबसे छोटा था। घटना को लेकर पुलिस ने पिता गोपी ठाकुर और परिवारजनों से भी पूछताछ करेगी।

जांच में जुटी है पुलिस

जयनगर थाना प्रभारी प्रशिक्षु डीएसपी स्निग्धा सलामे ने बताया कि अन्य माध्यमों से जानकारी जयनगर पुलिस को मिली है। मर्ग अंबिकापुर के गांधीनगर थाने में कायम हुआ है। मर्ग डायरी नहीं पहुंची है, जिसके कारण जयनगर पुलिस को ज्यादा जानकारी नहीं है। मर्ग डायरी मिलने के बाद मामले में जांच आगे बढ़ेगी।

भारत ने मालदीव को दी बड़ी राहत,15 करोड़ डॉलर का कर्ज लौटाने की समय सीमा बढ़ाई

माले,12 मई 2024। भारत ने मालदीव को बड़ी राहत देते हुए 15 करोड़ डॉलर का कर्ज लौटाने की समय सीमा बढ़ा दी है। भारत का दौरा कर मालदीव लौटे वहां के विदेश मंत्री मूसा जमीर ने यह जानकारी दी। मूसा जमीर ने ये भी बताया कि मालदीव में भारत के समर्थन से चल रहीं परियोजनाओं में भी महत्वपूर्ण तेजी आई है। जमीर 8-10 मई को भारत दौरा कर मालदीव पहुंचे हैं।

भारत ने कर्ज के पुनर्भुगतान में दी राहत

मालदीव के राष्ट्र पति कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान मूसा जमीर ने बताया कि भारत ने मालदीव को 20 करोड़ डॉलर के कर्ज में से 15 करोड़ के कर्ज के पुनर्भुगतान की समय सीमा बढ़ाने की हरी झंडी दे दी है। यह कर्ज भारत ने मालदीव की पिछली सरकार को दिया था। जमीर ने बताया कि मालदीव जनवरी में 5 करोड़ डॉलर का भारत को पुनर्भुगतान कर चुका है और बाकी के 15 करोड़ डॉलर का भी जल्द भुगतान किया जाना था, लेकिन अब मालदीव की मांग पर भारत ने पुनर्भुगतान की समय सीमा बढ़ा दी है।

भूकंप से थर्राया मैक्सिको, रिक्टर स्केल तीव्रता 6.4 मापी गई

मैक्सिको सिटी,12 मई 2024। मैक्सिको-ग्वाटेमाला सीमा पर भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 6.4 मापी गई है। अभी तक किसी बड़े नुकसान की खबर नहीं है। भूकंप के झटके लगने से लोग दहशत में आ गए और अपने-अपने घरों से बाहर निकल आए। भूकंप के झटके मैक्सिको के शहर सुचिएट में सुबह छह बजे महसूस किए गए। सुचिएट शहर मैक्सिको-ग्वाटेमाला सीमा पर बसा है और सुचिएट नाम की नदी दोनों देशों की सीमाओं को अलग करती है। सुचिएट नदी जहां समुद्र में गिरती है, उसी जगह भूकंप का केंद्र था।

भूकंप से किसी नुकसान की खबर नहीं है, लेकिन भूकंप के चलते पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की आशंका है। ग्वाटेमाला में कुछ जगहों पर भूस्खलन हुआ है, लेकिन वहां भी किसी बड़े नुकसान की खबर नहीं है। मैक्सिको में बीते साल दिसंबर में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए थे।

धूलभरी आंधी से जनजीवन हुआ प्रभावित,दर्जन भर स्थानों पर गिरे पेड़,टूटी डंगालें, कई स्थानों पर बिजली आपूर्ति बाधित

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)।

मौसम में आज दोपहर अचानक आए बदलाव से चल रही तेज आंधी और हवाओं से शहर के कई हिस्सों की बिजली व्यवस्था चौपट हो गई। करीब 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा की वजह से शहर के अलग-अलग हिस्सों में दर्जन भर पेड़ गिर गए और कई जगहों पर डंगाल टूटने से विद्युत सप्लाई लाइन में फाल्ट आ गया। सप्ताह भर में दूसरी बार खराब मौसम के कारण आम और लीची के फलों को भारी नुकसान पहुंचा है।

आंधी-तूफान से शहर की बिजली व्यवस्था को बहाल करने के लिए विद्युत विभाग के अतिरिक्त अमले को लगाया गया लेकिन देर शाम तक शहर के आधे से ज्यादा इलाके में बिजली व्यवस्था प्रभावित रही। मौसम विभाग के अनुसार उत्तरी छत्तीसगढ़ में पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से चक्रवाती परिसंचरण की स्थिति बनी हुई है। यही कारण रहा कि तेज हवा ने बवंडर का रूप ले लिया और करीब आधे घंटे तक शहर 50 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हवा चलती रही। उत्तरी छत्तीसगढ़ में पश्चिमी विक्षोभ के असर से रविवार दोपहर बाद तेज धूलभरी हवा ने पूरे शहर को ढंक लिया। इससे शहर में आवागमन प्रभावित हो गया। इसका सबसे ज्यादा असर बिजली व्यवस्था पर पड़ा। इन स्थानों पर पेड़ व डंगाल टूटी-विद्युत विभाग के अनुसार तेज हवा के कारण शहर के डीसी रोड इलाके में सर्वाधिक चार

स्थानों पर डंगाल के टूटने व विद्युत लाइन में सटने से बिजली व्यवस्था में व्यवधान आया। इसकी वजह से जगह-जगह एलटी लाइन व ट्रांसफार्मर में फाल्ट आ गया। घरों में बिजली बंद होने की सूचना विभाग के शिकायत केंद्र में पहुंचने लगी।

जानकारी के अनुसार दर्जनों शिकायत उपभोक्ताओं द्वारा शिकायत केंद्र में दर्ज कराई गई हैं जिन्हें सुधारने में विद्युत अमला जुटा है। जानकारी के अनुसार तेज हवा के कारण कमिश्नर बंगला के पास एक पेड़ बिजली लाइन में गिर गई। नवागढ़ के आलमबाग क्षेत्र में पेड़ का आधा हिस्सा टूटकर गिर गया। यही स्थिति तुर्रापानी इलाके में भी रही। गुदरी चौक में पेड़ की ऊपरी शाखाएं विद्युत लाइन में सट गई। रामानुजगंज रोड में संजय पार्क के पास भी बांस की ऊपरी शाखाएं बिजली लाइन में छूने लगी। गुदरी बाजार के भीतर पीपल पेड़ की शाखाएं सप्लाई लाइन से सट गई। पेड़ों व डंगाल के टूटने से कुछ स्थानों पर विद्युत खंभा व तार टूटकर क्षतिग्रस्त हो गया है। शहर के डिगमा, तुर्रापानी, कमिश्नर बंगला के पास खंभा टूट गया है। इन खराबियों को दूर करने में विद्युत विभाग के कर्मचारियों को भारी मशक्कत करनी पड़ी। हालांकि शाम पांच बजे के आसपास शहर के कुछ इलाकों में बिजली व्यवस्था बहाल कर दी गई लेकिन अधिकांश इलाकों में बिजली सप्लाई बाधित रही। पेट्रोलिंग टीम जगह-जगह बिजली लाइन में आई खराबी को दूर करने में जुटी है।

मौसम विज्ञानी एएम भट्ट के अनुसार देश के मध्य व पूर्वी इलाके में विक्षोभ के प्रभाव से जगह-जगह चक्रवात बना हुआ है। इससे बड़े क्षेत्र में चक्रवाती परिसंचरण प्रभावी है। इसका प्रभाव उत्तरी छत्तीसगढ़ में भी बना हुआ है। रविवार दोपहर इलाके में चली तेज हवा इसी का असर है। आने वाले दो दिन बाद विक्षोभ का असर कमजोर पड़ने से लोगों को खराब मौसम से राहत मिलने की उम्मीद है। इस दौरान तापमान में ज्यादा बढ़ोतरी नहीं होगी।

मैनपाट घूमने आईं जर्मनी की दो महिला टूरिस्ट... मंदिर में किया हनुमान चालीसा का पाठ

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)।

जर्मनी से 2 महिला टूरिस्ट छत्तीसगढ़ के शिमला के नाम से मशहूर मैनपाट में घूमने आईं हैं। इनमें शामिल एक महिला का हनुमान मंदिर में बैठकर हनुमान चालीसा पाठ करते वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हैरान करने वाली बात यह है कि हनुमान चालीसा का पाठ जर्मन महिला को कंठस्थ है।

छत्तीसगढ़ के मैनपाट में इन दिनों 2 जर्मन महिलाएं घूमने आई हैं। इस दौरान स्थानीय व्यक्ति के साथ वे टाइगर प्वाइंट, फिश प्वाइंट समेत यहां स्थित सभी रहस्यमयी जगहों पर गईं और लुत्फ उठाया। तिब्बतियों के रहन-सहन व मंदिर भी गईं। इसी बीच हनुमान मंदिर में बैठकर उन्होंने हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। इनमें शामिल एक जर्मन महिला को पूरा चालीसा पाठ कंठस्थ है। महिला का संगीतमयी चालीसा पाठ करते वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। महिला ने चालीसा पाठ का अंत जय श्रीराम बोलकर किया।यह देख वहां मौजूद लोगों ने भी तालियां बजाईं। जर्मन महिलाओं ने मैनपाठ के दलदली,पाताल कुआं,उल्टा पानी सहित अन्य स्थलों की जमकर तारीफ की। तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा के बारे में भी उन्होंने तिब्बतियों से जानकारी ली।

चाइल्ड पोर्नोग्राफी के मामले में आरोपी गिरफ्तार

- संवाददाता -

अंबिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)। चाइल्ड पोर्नोग्राफी के मामले में उदयपुर पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार एक व्यक्ति द्वारा महिलाओं व नाबालिग बच्चों की अश्लील फोटो व वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड किया गया था। एनसीआरबी दिल्ली से प्राप्त होने पर साइबर सेल की मदद से पुलिस ने आरोपी 24 वर्षीय मो. रूस्तम निवासी झिरमिटी उदयपुर को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो वह जूर्म स्वीकार कर लिया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त मोबाइल जब्त किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 509 (ख), 67 (बी) आईटी एक्ट, पोक्सो एक्ट की धारा 13, 14 के तहत कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

क्षेत्र में हाथियों का आतंक जारी,फिर एक ग्रामीण महिला को कुचला,अलग-अलग क्षेत्र में दो दल कर रहे हैं विचरण

- संवाददाता -
प्रतापपुर (सूरजपुर),12 मई 2024 (घटती-घटना)।

क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय जंगली हाथियों द्वारा बरपाया जा रहा कहर वन विभाग की लाख कोशिशों के बावजूद थमने का नाम नहीं ले रहा है। हाथी लगातार जंगल से सटे ग्रामीण इलाकों में प्रवेश कर ग्रामीणों को मौत के घाट उतारने के साथ ही उनकी फसलों को भी चौपट करने में लगे हुए हैं। शनिवार को फिर एक ग्रामीण महिला को जंगली हाथी की चपेट में आ जाने के कारण अपनी जान गंवानी पड़ी।

जानकारी के अनुसार शनिवार की रात तीन हाथियों का दल वन परिक्षेत्र राजपुर के वनक्षेत्र खोड़निया में विचरण कर रहा था। चुंकि यह क्षेत्र वन परिक्षेत्र प्रतापपुर के वनक्षेत्र खड़गवां कला से लगा हुआ है इसलिए वन विभाग प्रतापपुर के हाथी मित्र दल व वन कर्मियों द्वारा मुनादी कर लगातार हाथियों के विचरण की जानकारी आसपास के गांवों में देते हुए ग्रामीणों को सावधान रहने की समझाइश दी जा रही थी। इसी बीच रात को 9:30 बजे हाथियों का यह दल

वनक्षेत्र खड़गवां कला के कक्ष क्रमांक पी 2558 में प्रवेश करते हुए रात 10:30 पर जंगल से सटे झींगापारा पहुंचा। जहां एक ग्रामीण महिला के खेत में लगी गन्ने की फसल को खाया फिर पास में ही बने महिला के घर को तोड़ने लगे। तोड़फोड़ की आवाज सुनकर घर में अकेली सो रही महिला विरांची देवी पति स्व. ननका राम उम्र 65 वर्ष उठकर बाहर निकली तो सामने हाथियों का दल खड़ा था। इससे पहले कि महिला अपनी जान बचाने को कुछ कर पाती कि तभी दल के एक हाथी ने उसे सूंड़ में लपेटकर जमीन पर पटका और पैरों से कुचल दिया जिससे महिला की मौके पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम महिला के शव को रात में ही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रतापपुर ले आई थी। जहां सुबह के समय मृतका के शव का पोस्टमार्टम कराकर उप वन मंडलाधिकारी आशुतोष भगत व प्रतापपुर रेंजर उत्तम मिश्रा ने स्वजनों को तात्कालिक सहायता राशि के रूप में 25 हजार रुपए नगद प्रदान कर शेष मुआवजा राशि का प्रकरण भी जल्द तैयार करने की बात कही।

वन अधिकारी क्षेत्र का दौरा कर दे रहे समझाइश

क्षेत्र में विचरण कर रहे हाथियों से ग्रामीणों को सावधान रहने के लिए वन कर्मियों के साथ वन विभाग के अधिकारी भी ग्रामीणों को घर घर जाकर समझाइश दे रहे हैं। इस संबंध में उप वन मंडलाधिकारी आशुतोष भगत ने न?ईदुनिया को बताया कि महिला की जान लेने वाले तीन हाथियों का दल अभी खड़गवां के कक्ष क्रमांक पी 2557 व 2558 में विचरण कर रहा है। इसके अलावा वन परिक्षेत्र प्रतापपुर के ही वनक्षेत्र धरमपुर में भी पांच से लेकर छह हाथियों का एक अन्य दल भी सक्रिय है। इस दल में एक मखना हाथी भी शामिल है। फिलहाल यह दल वनक्षेत्र धरमपुर के कक्ष क्रमांक 20,21 में विचरण कर रहा है। उप वन मंडलाधिकारी भगत ने बताया कि इस पांच-छह हाथियों के दल की वनक्षेत्र धरमपुर के ग्राम भरदा, दलदली, सिंघरा, मदननगर, गणेशपुर सहित अन्य ग्रामों की ओर जाने की संभावना है। ग्रामीणों को घर घर जाकर व मुनादी के माध्यम से भी समझाइश देकर जंगल की ओर जाने से मना किया जा रहा है। हाथी मित्र दल व वन कर्मियों के द्वारा भी क्षेत्र में सक्रिय हाथियों के दोनों दलों पर लगातार नजर रखी जा रही है।

असफाक के अधिवक्ता साहब!

क्या किसी पर संदेह व्यक्त करना अपराध है, और ऐसे में फिर इसकी सजा क्या होगी?

अधिवक्ता साहब जी खबर की बात कर रहे हैं उस खबर में यह भी लिखा है की घटती-घटना उसकी पुष्टि नहीं करता...

अधिवक्ता ने असफाक उल्लाह के नोटिस में खबरों का उल्लेख किया है जिसके आधार पर उन्होंने असफाक के लिए उसकी तरफ से पत्रकार को नोटिस भेजा है जबकि अधिवक्ता जिन खबरों के आधार पर नोटिस भेज रहे हैं उनमें यह भी लिखा है की घटती-घटना खबर की पुष्टि नहीं करता है पर जाँच की माँगा जरुर करता है ताकि लोक किसी भी धोके में न आये।

असफाक जैसे अपना मूल कर्तव्य नहीं निभाने वाले लोग समाचार से आक्रोशित होकर वकीलों की शरण में पहुंच रहे हैं ...

जब सूत्रों व जनचर्चा के माध्यम से जानकारी अखबार समूह के पास पहुंची तब अखबार ने निष्पक्षता के साथ खबर प्रकाशित कर जागरूकता के साथ संबंधित विभाग को जानकारी देने काम किया,वहीं खबर प्रकाशन से नाराज होकर असफाक उल्लाह जैसे अपना मूल कर्तव्य नहीं निभाने वाले लोग समाचार से आक्रोशित होकर वकीलों की शरण मे जातें हैं और समाचार के विरुद्ध संवाददाता को अधिवक्ता के माध्यम से वैधानिक नोटिश जारी करवाते हैं। इन सभी विषयों के बीच दो बातें महत्वपूर्ण हो जाती हैं जिसमें एक तरफ खबर से आक्रोशित असफाक का आक्रोश है और वह जायज भी है क्योंकि सच सुनने की क्षमता शायद उनमे न रही हो वहीं विडंबना यह कि उनके अधिवक्ता अपने मुवक्किल के लिए लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को ही वैधानिक नोटिस जारी कर एक तरह से बांधने का प्रयास करते नजर आते हैं,जबकि शायद उन्हें भी नहीं मालूम उनका वैधानिक नोटिश स्वमेव निरस्त भी हो सकता है। तथ्यों के आधार पर समाचार प्रकाशित करने का अधिकार समाचार प्रकाशित करने का दायित्व निभाने वाले लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के किसी भी प्रहरी के पास सदैव उपलब्ध रहने वाला अधिकार है, वहीं वह इससे खुद को वंचित भी नहीं रखना चाहेगा। चंद शुल्क प्राप्ति की लालसा में किसी के अधिकारों से ही उसको वंचित करने का यह नोटिस स्वरूप का हथियार कहीं इसे चलाने वाले पर ही उल्टा प्रहार करने वाला न साबित हो जाये यह ऐसा करने से पहले सोचना ऐसे लोगों के लिए जरूरी है। लोकतंत्र में चौथे स्तंभ का अधिकार मिला हुआ है स्वतंत्र होकर निष्पक्ष होकर समाचार प्रकाशन का वह समाचार प्रकाशित करने का दायित्व निभा रहा संपादक व संवाददाता निभाता रहेगा वहीं ऐसे किसी नोटिस का जवाब भी दिया जाता रहेगा जो सच को झूठ के बल पर दबाने के प्रयासों वाला होगा।

बार एसोसिएशन में असफाक के अधिवक्ता की शिकायत की जायेगी

मामले में कुछ संपादकों व संवाददाताओं का कहना है कि ऐसे अधिवक्ताओं का जो समाचारों के प्रकाशन पर नोटिस जारी कर लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को बाधित करने का प्रयास कर रहें हैं कि शिकायत बार एसोसिएशन में की जानी चाहिए,वहीं इसके लिए तैयारी किये जाने की बात भी रखी गई। असफाक के अधिवक्ता क्या उनकी गलत जानकर भी लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को डराने का काम कर रहे हैं? जिस वजह से अशफाक की गलत जानकारी में उन्होंने पत्रकार को वैधानिक नोटिस भेजी है? क्या अधिवक्ता सब भूल गए कि पत्रकार को जांच करने का अधिकार है क्या? यदि पत्रकार को अधिवक्ता साहब जांच करने का अधिकार दिला दें तो पत्रकार ही पूरे मामले की जांच करके बता देगा कि अशफाक का पूरा कारोबार अवैध है,क्या एक अधिवक्ता के खिलाफ शिकायत दर्ज करने के लिए स्टेट बार काउंसिल एक उपयुक्त फोरम है। स्टेट बार काउंसिल शिकायत प्राप्त होने पर,या अपने स्वयं के प्रस्ताव पर,उस अधिवक्ता के खिलाफ दुराचार का मामला अपनी अनुशासन समितियों में से किसी एक के पास दर्ज कर सकती है जिसे लेकर पत्रकार ने अधिवक्ता की शिकायत स्टेट बार काउंसिल में की है। वही अधिवक्ता साहब क्या संविधान के अनुच्छेद 19(1)(अ)- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत आपके द्वारा भेजा गया नोटिस विधिसंगत नहीं है?

क्या सवाल करना लोकतंत्र में अधिकार नहीं अधिवक्ता साहब?

असफाक के अधिवक्ता से एक सवाल है की क्या सवाल करना लोकतंत्र में अधिकार नही है जबकि सवाल करने वाला खुद लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की जिम्मेदारी निभा रहा है। असफाक के अधिवक्ता ने पत्रकार को वैधानिक नोटिस जारी कर यह भी कहा है की पत्रकार अनुचित लाभ चाहता है जबकि इसका कोई सबूत न असफाक के पास है न ही असफाक के अधिवक्ता के पास कुल मिलाकर पत्रकार को एक तरह से डराने और बांधने के लिए कानूनी नोटिस भेजा गया है जिससे वह असफाक के खिलाफ खबर का प्रकाशन न करे जबकि पत्रकार खबर का प्रकाशन तब तक करता रहेगा जब तक की असफाक अपनी आय की जानकारी साझा नहीं कर देते हैं।

आखिर किस मोबाइल नंबर से पैसे के लिए हुई थी बात?

अधिवक्ता ने नोटिस में मोबाइल नंबर पर पैसे की मांग की बात कही है आरोप लगाया है। अधिवक्ता को यह स्पष्ट करना चाहिए की किस नंबर से पैसे की लेनदेन की बात हुई वहीं यदि बात हुई तो कितने पैसों की बात हुई। नंबर पर पत्रकार से बात यदि हुई तो फोन किसने किया क्योंकि पत्रकार ने अपने तरफ से कोई फोन नहीं किया वहीं फोन समाचार प्रकाशन के पूर्व किया गया मांग खबर प्रकाशन के पूर्व हुई की बाद में। कुल मिलाकर यदि उधर से फोन लगाया गया उनके पक्षकार द्वारा किसी को जिसे वह पत्रकार बता रहे हैं क्योंकि पत्रकार जिसे नोटिस जारी हुआ है उससे कोई बात नहीं हुई है ऐसे में यह भी सवाल है की जब असफाक उल्लाह का कारोबार एक नंबर का है तो फिर क्यों उन्हे खबरों से डरना पड़ रहा है और पत्रकार से बात करने का प्रयास करना पड़ रहा है।

जब आपका पक्षकार इतना ही सही था तो फिर पत्रकार को फोन करने की जरूरत क्या थी?

अधिवक्ता से एक सवाल यह भी है की उनका पक्षकार यदि साफ-सुथरा व्यापार करता है चिटफंड का उसका व्यापार नहीं है वहीं महादेव सट्टा ऐप से उसका कोई कनेक्शन नहीं है तो फिर उसकी छवि धूमिल कैसे हो रही है वहीं उसका व्यवसाय कैसे प्रभावित हो रहा है जब वह एक नंबर का काम कर रहा है वहीं उसे जब सब कुछ वह सही कर रहा है उसका व्यवसाय सही है तो खबर प्रकाशन को लेकर उसे पत्रकार को फोन करने की जरूरत क्या पड़ गई थी।

पत्रकार को सूत्रों के हवाले से मिली खबर छापने व लोगों को जागरूक करने का भी अधिकार है?

असफाक उल्लाह के अधिवक्ता जिन्होंने घटती-घटना के पत्रकार को खबर प्रकाशन के लिए वैधानिक नोटिस भेजा है वह शायद भूल गए हैं की पत्रकार को सूत्रों के हवाले से खबर प्रकाशन का अधिकार है। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को यह अधिकार है की वह सूत्रों की दी गई जानकारी की हल्की समीक्षा कर उसका प्रकाशन कर सकता है वहीं यदि खबर किसी को झूठी और अनर्गल लगती है तो फिर ऐसे व्यक्ति को सबूत के साथ अपने ऊपर लगे आरोपों का खंडन करना चाहिए अधिवक्ता से वैधानिक नोटिस जारी करवाकर पत्रकार को दबाना लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को ही दबाने जैसा प्रयास माना जायेगा।

अभिव्यक्ति की आजादी को लेकर सुप्रीम कोर्ट का भी है एक निर्णय क्या आप उससे हैं अनभिज्ञ, रिपोर्ट सही गलत हो सकता है,यही अभिव्यक्ति की आजादी है...

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि रिपोर्ट में सही या ग़लत हो सकता है,लेकिन अपने विचार रखने की स्वतंत्रता का अधिकार हर किसी को है

पूरे मामले को लेकर दैनिक घटती-घटना का खुला पत्र..सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा...

क्या किसी को धोखे के प्रति जागरूक करना व अवैध कारोबार के लिए लिखना समाचार पत्र में लिखना पत्रकार के लिए खतरे का काम हो गया है?

फाईल :फोटो

-ओंकार पाण्डेय-
सूरजपुर 12 मई 2024
(घटती-घटना)।

अवैध कारोबार करने वाले समाज व लोकतंत्र के हितैशी बनते जा रहे हैं पर वही अवैध कारोबार का विरोध करने वाले समाज व लोकतंत्र के दुश्मन कैसे हो गए? आखिर ऐसा क्या बदलाव हो रहा है की लोगों की सोच गलत की तरफ ज्यादा और सही की तरफ कम होती जा रही? इस समय देश में ऐसे ऐसे विज्ञापन चल रहे हैं जो लोगों को यह बता रहे हैं कि बिना मेहनत के ही आप करोड़पति बन सकते हैं पर कोई मेहनत के साथ करोड़पति बनने का विज्ञापन नहीं दिखा रहा, इस समय गलत तरीके से पैसा कमाना व बिना मेहनत के पैसा कमाना ही लोगों की हॉबी हो गई है, कुछ ऐसा ही इस समय घर बैठे निवेश कीजिए और अच्छी रकम लेजाइये ऐसा स्कीम सरगुजा संभाग में चल रहा है,अब इसे वैध माने या फिर अवैध यह तो जांच करने वाले एजेंसियों की बात है पर जांच करने की जहमत उठाना कोई नहीं चाहता, अब अवैध कारोबार में संलिप्त लोगों को आगे बढ़ाया जा रहा है पर वहीं उसके विरोध करने वाले कई समस्याओं से जूझ रहे हैं, आखिर क्या लोकतंत्र के अंग अपना काम सही तरीके से नहीं कर रहे हैं यह सवाल भी अब खड़ा होने लगा है? आज के युग में अधिक पैसा कमाना यह सब का उद्देश्य है पर पैसे कमाने की राह का सही चुनाव लोग भूल गए हैं, पूर्व से लेकर वर्तमान शासन काल में पत्रकारिता करना काफी कठिन काम हो चला और वह भी उस समय जब जिम्मेदारों की कमियां बताई जाए तब, कमियों का एहसाह करवाना ही पत्रकार के लिए बड़ी मुसीबत बन जा रही है, जब तक महिमा मंडन कीजिए तब तक पत्रकारिता और

घटती घटना | अम्बिकापुर ,शुक्रवार 10 मई 2024 | 5

असफाक उल्लाह के अधिवक्ता ने

घटती-घटना के पत्रकार को भेजा वैधानिक नोटिस

पत्रकार न्यायालय जाने के लिए तैयार...

माननीय न्यायालय से करेंगे असफाक मामले की जांच करने की मांग...

पत्रकार दोनों सुरक्षित हैं,यदि कमियां दिखाएं या बताया तो फिर सुरक्षा भूल जाइए और कार्यवाही के लिए तैयार रहीए। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को दबा के रखना उनके सुख को प्रदर्शित करता है और उनकी कमियों की आड़ बनी रहती है। पिछले कुछ सालों से कमियों को बताने व आलोचना करने वाले पत्रकारों को पुलिस झूठे एफआईआर व नोटिस भेज कर दबाने का चौतरफा प्रयास कर रही है? यदि कार्यवाही में कोई संदेह निर्मित होता है तो क्या उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता? गलत राह से ही पैसा कमाना अब उद्देश्य बनता जा रहा है जिस पर लगाम लगाने वाला सरकारी तंत्र भी फेल होता दिख रहा है या कई जगह सम्मिलित नजर आता है? कुछ ऐसा ही मामला सूरजपुर जिले के एक छोटे से गांव से जुड़ा हुआ है जहां पर तकरीबन 2 साल से अवैध पैसा निवेश का काम बहुत तेजी से पनप रहा था पर इसकी जानकारी तब उजागर होना शुरू हुई जब पैसा लगाने वाले के गुर्गे सहित पैसा लगाने वाले सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर गिफ्ट का प्रचार करने लगे और प्रचार कर यह बताने लगे की पैसा निवेश करने पर काफी अच्छा रिटर्न मिल रहा है, इससे पहले इस कारोबार की जानकारी किसी को नहीं थी फिर इस कारोबार को पता करने के लिए दैनिक घटती-घटना ने मुहिम छेड़ी और इस कारोबार की जांच हो इसकी मांग उठी और फिर इस कारोबार के रफ्तार में कमी आई, जिससे यह साबित हुआ कि कहीं ना कहीं यह कारोबार गलत तरीके से संचालित हो रहा था पर कारोबार करने वालों को समाज सहित सरकार का संरक्षण कार्यवाही व जांच से आज तक बचा रहा है? वही इस कारोबार से लोगों को जागरूक करने वाला पत्रकार ही समाज सरकार का दुश्मन होता जा रहा है कारोबार करने वाले की पहचान इतनी तगड़ी है कि अब वह लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के कलम को भी तोड़ने का प्रयास करने लगा है, कभी पत्रकार के विरुद्ध शिकायत करता है तो कभी अपने अधिवक्ता से मानहानि का नोटिस भेजता है और पत्रकार को अब तक के छपे खबरों का खंडन छापने का दबाव बनाना चाहता है ताकि उसका व्यापार सुचारू रूप से चलता रहे और लोगों को यह मैसेज दे सके की देख लिये ना लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हमारा कुछ नहीं कर सकता। यहां तक की पत्रकार के हत्या का भी षड्यंत्र करने से बाज नहीं आता, इससे यह बात तो साबित हो जाती है की कारोबार अवैध ही था जिसकी बौखलाहट और छटपटाहट इतनी है कि लोकतंत्र के कलम को कैसे तोड़े इसका प्रयास जारी है। अब पत्रकार को लड़ाई मामला उजागर करने के लिए नहीं अब अपने आप को बचाने के लिए लड़नी होगी कुछ ऐसा ही सिस्टम हो गया है?

पहले तो खुद ही सोशल मीडिया पर अपने कारोबार की गंध मचाई और अब कारोबार को वैध बताने के लिए जोर आजमाइश?

असफाक उल्लाह नाम का व्यक्ति मात्र 22 वर्ष की उम्र में ही काफी ख्याति पा लिया है यह बात उनके अधिवक्ता भी नोटिस में बता चुके हैं, जबकि 65 की उम्र में उनके पिता उतनी ख्याति नहीं कमा सके जितनी ख्याति उनके पुत्र ने 22 की उम्र में कमा ली है, इनका कारोबार क्या था यह किसी को 2023 से पहले पता नहीं था कोई नहीं जानता था कि यह क्या करते हैं पर अचानक 2023 में बहुत बड़े आदमी बन गए कैसे? पिता 65 साल की उम्र में इतने बड़े आदमी तो नहीं बने पर 22 साल की उम्र में उनका बेटा बहुत बड़ा आदमी बन गया, अब समझ में यह नहीं आता है कि पिता ने मेहनत नहीं की या फिर बेटा ने कुछ ज्यादा ही मेहनत कर दिया, 22 की उम्र वाले अशफाक की कहानी ही कुछ अजीब है जिन्हें बाइक में देखा जाता था वह अचानक फॉर्च्यूनर व बीएमडब्ल्यू जैसी कार चढ़ने लगे यह स्थिति कैसे बदली इसकी जांच कोई करना नहीं चाहता पर इस स्थिति का प्रचार सोशल मीडिया पर खूब हो रहा था और लोगों को खूब गिफ्ट बांटे जा रहे थे जिसकी कई फोटो व तस्वीर आज भी मौजूद हैं और असफाक उल्लाह का नाम लिखा जा रहा था पर सवाल यह उठता है कि आखिर असफाक ऐसा कौन सा कारोबार कर रहे थे कि उन्हें इतनी महंगी महंगी गिफ्ट बांटने पड़ रहे थे? ऐसे कई दुकान संचालक है जो छोटे-मोटे गिफ्ट बाटते हैं पर इतना बड़ा गिफ्ट जिसमें कार बाइक व मोबाइल बाटते पहले व्यवसाई को देखा गया जो हम नहीं कहते यह उनके सोशल मीडिया पर डाले गए फोटो बता रहे थे?

असफाक की तरह शिवा साहू के छोटे से गांव का भी मामला है पर उसके विरुद्ध पुलिस कार्रवाई कर रही

सारंगढ़ के छोटे से गांव में रहने वाला शिवा साहू भी असफाक की तरह पैसा लोगों का दुगना करता था महंगी गाड़ियों को शौक रखता था उसके पीछे भी युवाओं की बहुत बड़ी फौज थी आज उसके कारोबार को ध्वस्त करने के लिए पुलिस लगातार कार्यवाही कर रही पर वहीं असफाक उल्लाह को पुलिस का ही संरक्षण मिल रहा है असफाक उल्लाह के पीछे न जाने कौन से मंत्री विधायक की ताकत काम कर रही है कि पुलिस उसके गिरेबान पर हाथ डालने से बच रही है? आखिर पुलिस अशफाक के इनकम का सोर्स क्यों नहीं पता लगाना चाह रही पर वही असफाक की जांच ना हो इस वजह से अशफाक पत्रकार को दबाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं कभी वसूली का आरोप लगाते हैं तो कभी उनके मानहानि का अधिवक्ताओं द्वारा नोटिस पत्रकार को जारी हो रहा है सभी उनके लिए बचाव में काम कर रहे हैं।

अभिव्यक्ति की आजादी को लेकर सुप्रीम कोर्ट का भी है एक निर्णय,रिपोर्ट सही गलत हो सकती है,यही अभिव्यक्ति की आजादी

दैनिक घटती-घटना के पत्रकार को जिस तरह से खबर के आधार पर नोटिस भेजकर परेशान करने का प्रयास किया जाता है यह बात किसी से छुपी नहीं है,खबर का प्रकाशन पर जहां मामले में संज्ञान लेकर जाँच की जाति पर उल्टा शिकायत कर पत्रकार की ही जांच शुरू कर दी जाती है, यदि सुप्रीम कोर्ट के ताजा मामले के अनुसार और निर्णय के अनुसार देखा जाए तो वह अभिव्यक्ति की आज़ादी का उलंघन है। सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर हिंसाग्रस्त क्षेत्र पहुंचे एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के चार सदस्यों के खिलाफ दर्ज प्रकरण को रद्द क्यों न किया जाए ऐसा कार्यवाही के दौरान कहा था, वहीं शिकायतकर्ता को यह कहा था की वह स्थापित करे की विभिन्न जाति समूहों के बीच एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की रिपोर्ट की वजह से दुश्मनी बढ़ेगी। कोर्ट ने कहा की पत्रकार सही या गलत हो सकते हैं पूरे देश में हर दिन गलत चीजें रिपोर्ट हो रही हैं तो क्या अथॉरिटी पत्रकार पर मुकदमा चलाएगी? मामला जिसपर सुप्रीम कोर्ट ने लिया है संज्ञान। मणिपुर हिंसा की रिपोर्ट पर एडिटर्स गिल्ड के ख़िलाफ़ केस अभिव्यक्ति की आज़ादी के खिलाफङ्कोर्ट हिंसाग्रस्त मणिपुर संबंधी एक फैक्ट-फाइंडिंग रिपोर्ट को लेकर राज्य पुलिस द्वारा दायर एफआईआर को एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है, इस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि गिल्ड अपनी रिपोर्ट में सही या ग़लत हो सकता है, लेकिन अपने विचार रखने की स्वतंत्रता का अधिकार हर किसी को है। सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की पीठ सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में गिल्ड की एक याचिका पर सुनवाई कर रही है, जिसमें इसके सदस्यों के खिलाफ की गई कार्रवाई को चुनौती दी गई है,सुनवाई के दौरान माननीय सीजेआई चंद्रचूड़ ने पूछा,यह मानते हुए कि उन्होंने जो कहा वह झूठ है और आपका कहना है कि हर पैराग्राफ झूठा है, लेकिन किसी लेख में गलत बयान देना धारा 153 ए के तहत अपराध नहीं होता, यह त्रुटिपूर्ण हो सकता है, त्रुटिपूर्ण चीजें देश भर में हर दिन रिपोर्ट की जाती हैं, क्या आप धारा 153 ए के लिए पत्रकारों पर मुकदमा चलाएंगे? सीजेआई ने कहा कि ईजीआई मणिपुर हिंसा के पक्षपातपूर्ण मीडिया कवरेज के बारे में अपनी रिपोर्ट में सही या गलत हो सकता है, लेकिन अपने विचार रखने के लिए उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है। जब शिकायतकर्ताओं ने बार-बार ईजीआई द्वारा अपनी रिपोर्ट के माध्यम से मणिपुर में किए गए नुकसान का उल्लेख किया तो सीजेआई बोले, मुद्दा उठाया है तो हमें पहले इस बारे में बताइए कि इन अपराधों हुए हलफनामा दायर करें, इसे रिकॉर्ड पर रखें, शिकायतें और एफआईआर क्यों रद्द नहीं की जानी चाहिएज्ऐसे कई जजमेंट पत्रकारों का निर्भगी हो के लिखने की आजादी देता है।

केरल उच्च न्यायालय ने समाचारों के प्रकाशन की स्वतंत्रता पर 2020 में दिया था फैसला

संपादक व संवाददता के विरुद्ध दर्ज एक मामले में 2020 में केरल उच्च न्यायालय का स्पष्ट आदेश जारी करते हुए प्रकरण को ही निरस्त कर दिया गया था जिसमें समाचार के प्रकाशन पर कार्यवाही की मांग की गई थी,माननीय केरल के उच्च न्यायालय ने फैसला दिया था कि संपादक संवाददाता किसी तथ्य या शिकायत पर समाचार प्रकाशन के लिए स्वतंत्र हैं और उनका यह अधिकार किसी आरोप को जो समाचारों से सम्बंधित हो से जोड़कर बांधा नहीं जा सकता।

सेंट्रल बैंक वेस्ट चिरमिरी शाखा में हमेशा लिंक फेल

» एसईसीएल,नगर निगम,एलआईसी,सहित इनमें कार्यरत श्रमिकों के हैं खाते,नित नए बहाने बनाकर किया जा रहा है ग्राहकों को परेशान...

» ग्राहक परेशान श्रमिकों और व्यापारियों के नहीं हो पा रहे हैं बैंकिंग कार्य...

» मात्र दो स्टाफ के भरोसे चल रहे हैं बैंक,शाखा प्रबंधक वसूली में मस्त,कैशियर और ग्राहक पूरी तरह से हुए पस्त...

-रवि सिंह-

चिरमिरी,12 मई 2024 (घटती-घटना)। सेंट्रल बैंक वेस्ट चिरमिरी का हाल बेहाल है,मात्र दो स्टाफ के भरोसे पूरा बैंक का संचालन बैंक प्रबंधन करवा रहा है,एक माह में लगभग 20 दिन लिंक फेल रहता है,काम ज्यादा और स्टाफ की कमी की वजह से ग्राहक और बैंक कर्मचारी दोनों परेशान हो चले हैं, बैंक का संचालन बद से बत्तर स्थिति में प्रबंधन द्वारा कराया जा रहा है, इस शाखा में कोयला कंपनी एसईसीएल, एलआईसी, नगर निगम के बड़े खाते संचालित हैं, जिसमें करोड़ों रुपए का टर्नओवर होता है इसके अलावा स्थानीय व्यापारी के भी खाते हैं आए दिन बैंक प्रबंधन और सरकारी अधिकारियों एवं व्यापारियों के बीच नोक झोंक देखी जा रही है बैंक मैनेजर का चिड़चिड़ा व्यवहार उनका काम टालने के रवैया से भी लोग बेहद परेशान है स्थानीय खाता धारकों ने बैंक की बदतर स्थिति को देखते हुए जल्द ही बड़े आंदोलन की योजना बना रहे है।

चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र में वैसे सेंट्रल बैंक की कई शाखाएं संचालित हैं लेकिन बेस्ट चिरमिरी एरिया में स्थित शाखा का हाल बेहाल है मिली जानकारी के अनुसार मात्र दो स्टाफ के भरोसे पूरा बैंक संचालित है एक बैंक मैनेजर हैं दूसरा कैशियर है प्रतिदिन कम से कम 500 लोगों का इस बैंक में आना-जाना बना रहता है जो बैंकिंग संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए यहां पर आते हैं इस बैंक में बड़े से बड़े व्यापारियों सहित गवर्नमेंट के के भी खाते संचालित है इसके अलावा शासकीय विभिन्न योजनाओं के तहत ग्रामीणों के भी खाते इस बैंक में संचालित है आए दिन ग्रामीण दूर से आकर बैंकों के सामने घंटे बैठे देखे जा सकते हैं और कई-कई बार तो वह अपने छोटे से काम के लिए एक-एक हफ्ते बैंक दौड़ते रहते हैं कभी बैंक का लिंक नहीं रहता तो कभी स्टाफ छुट्टी पर रहता है तो कभी बिजली गोल है तो कभी इनका कंप्यूटर सिस्टम फेल हो जाता है तो कभी कैश नहीं रहता, हर बार ग्राहको को बेवकूफ बनाने और डालने का सिलसिला बदस्तूर जारी है, प्रत्येक ग्राहक को हल्दीबाड़ी शाखा में या अन्य शाखा में भेजा जाता है और उन्हें सलाह दी जाती है कि वहां सारा सिस्टम ठीक रहता है आप वही काम अपना करवा लिया करें, बैंक के बाहर एक सेंट्रल बैंक का एटीएम भी लगाया गया है जो बैंक की तरह वह भी बीमार रहता है लोग रोज परेशान देखे जा सकते हैं पेंशनधारी खाताधारक महिलाएं हमेशा बैंकों के सामने बैठी रहती हैं और कई बार तो दो-दो तीन-तीन दिन तक वह अपनी सरकार की योजनाओं से जो पैसे उनके खाते में आते हैं वह परेशान दिखती है एक महिला ने तो बताया कि वह पिछले 4 दिन से बैंक आ रही है परंतु उसे पैसे नहीं मिल रहे हैं वही एक वयो वृद्ध दंपति ने बताया कि वह हफ्ते में दो बार आ चुकी है लेकिन बैंक का दरवाजा ही बैंक मैनेजर द्वारा नहीं खोला जा रहा है जिससे वह काफी परेशान है उसे बैंक से पैसे निकाल कर अपने इलाज के लिए पैसे देने हैं लेकिन पैसे नहीं होने के कारण वह अपनी दवाइयां नहीं खरीद पा रही है।

सेंट्रल बैंक के रिजनल मैनेजर से भी हुई शिकायत पर समस्या जस की तस

रीजनल मैनेजर सेंट्रल बैंक को भी इस समस्या के निराकरण के लिए कई बार स्थानीय जनों ने निवेदन किया है लेकिन उनके द्वारा भी अभी तक इस पर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया जा रहा है इस दौर में पैसों के लेनदेन के के सारे कार्य सारे काम ऑनलाइन के निर्देश सरकारी दे रही हैं, लेकिन जब ग्राहक अपने कार्यों के लिए बैंक में जाते हैं तो बैंक की अपनी अलग कहानी होती है आए दिन नई-नई कहानी सुना कर शाखा प्रबंधक और बैंक स्टाफ से लोग बोर हो चुके हैं शाखा प्रबंधक सिर्फ और सिर्फ पिछली वसूली में व्यस्त रहते हैं और उसी को वसूल कर अपना नंबर ऊपर बनाए में प्रयासरत रहते हैं 3ः30 ही मुख्य द्वार को बंद कर दिया जाता है और धूप में बाहर लोगों को खड़ा रखा जाता है प्रीतम नामक स्टाफ 3ः30 के बाद सिर्फ गेट खोलना और बंद करता देखा जा सकता है शाखा प्रबंधक यदि वह गेट खोलता है तो उसे डांट फटकार करते रहते हैं ग्राहकों को भी धमकाते हैं जबकि अन्य सभी बैंकों में पांच साढे 5 और 6 बजे तक ग्राहक आते जाते रहते हैं और उनको सेवाएं दी जा रही हैं।

सारे ग्राहकों को इसी शाखा में मर्ज कर दिया गया है...

वेस्ट चिरमिरी और जी एम कांप्लेक्स में पहले दो बैंक होती थी उनके सारे ग्राहकों को इसी शाखा में मर्ज कर दिया गया है इस स्थिति में यहां पर स्टाफ और व्यवस्थाएं और दुरुस्त करने की जरूरत थी लेकिन सेंट्रल बैंक प्रबंधन ग्राहक सेवा में फिसड्डी दिख रहा है और लोगों की मजबूरी का फायदा उठा रहा है ऐसी स्थिति पहले नहीं थी पिछले तीन-चार साल से ही बैंक का हाल बेहाल हो चला है सप्ताह में वैसे भी 5 दिन की बैंकिंग रहती है ऊपर से कई सारी छुट्टियां है इसके बाद यदि बैंक खुलता भी है तो दुनिया भर के नए-नए समस्याओं से ग्रस्त या बैंक पूरी तरह से बीमार हो चला है ऐसा नहीं है कि इसकी जानकारी उच्च अधिकारियों को नहीं है सारा काम ऑनलाइन होता है और ऊपर के लोग बैठे-बैठे वहां से भी देख रहे हैं की कौन सी शाखा बढ़िया काम कर रहा है कौन सा बैंक ठीक काम नहीं कर रहा है,, करोड़ों रुपए की डिपॉजिट रखने वाला या बैंक का हाल बेहाल हो चला है ग्राहक काफी परेशान है समस्या की निराकरण की मांग कर रहे हैं यदि बैंक प्रबंधन इस पर त्वरित निर्णय नहीं लेता है तो जल्दी एक सामूहिक आंदोलन करने की योजना बैंक ग्राहकों द्वारा बनाई जा रही है जिसकी चर्चा प्रतिदिन बैंक के सामने सुनने और देखने को मिलती है ग्राहक काफी परेशान हुए हैं जिला कलेक्टर महोदय से भी निवेदन है कि इस गंभीर लापरवाही वाले मामले को संज्ञान में लेकर हो रहे नागरिकों को दिक्कतों के निराकरण के लिए त्वरित कार्यवाही करने हेतु निर्देशित करें।

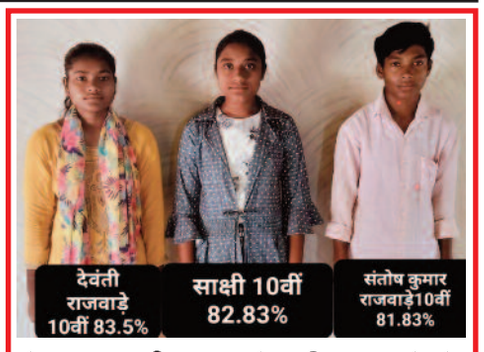

केवरा हाई स्कूल के तीन छात्रों ने स्कूल का नाम किया रोशन

-संवाददाता-

प्रतापपुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)। हाल ही में छत्तीसगढ़ शिक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा परिणाम घोषित किया और प्रतापपुर ब्लॉक के केवरा हाई स्कूल के छात्र एवं छात्राएं ने बड़ी संख्या में अच्छे नंबरों से परीक्षा पास की है इन्हीं में से एक केवरा निवासी रामकुमार राजवाड़े की बेटी देवंती राजवाड़े जो केवरा स्कूल में अध्ययन कर 83.5 परसेंट लाकर पहला स्थान प्राप्त किया वही उसी के बगल के साक्षी पिता रामशरण इन्होंने 82.83 लाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया यह छात्र भी केवरा हाई स्कूल में ही अध्ययनरत हैं वही तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र संतोष कुमार राजवाडे पिता हंसलाल राजवाड़े जो कि इन्होंने 81.83 परसेंट दसवीं में लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किए हैं यह तीनों होनहार छात्र एवं छात्राएं केवरा के एक ही जगह के रहने वाले हैं और ये तीनो छात्र-छात्राओं की बड़ी उपलब्धि से क्षेत्र सहित समाज स्कूल ग्राम को काफी गौरान्वीत किए हैं साक्षी और संतोष राजवाड़े काफी गरीब घर से ताल्लुक रखते हैं इतनी गरीबी में भी कितना अच्छे से नंबर लाना या उनकी मेहनत व लगन के कारण संभव हो पाया है इस छात्र एवं छात्राएं अपनी सफलता का श्रेय अपने परिजन एवं अपने गुरूजन को दे रहे हैं भविष्य में इनका कहना है की हमलोग और मेहनत करेंगे12वीं में और इससे भी अच्छी नंबर लाएंगे और नम्बर लाकर हमारा केवरा हाई स्कूल और परिजनों का नाम रोशन करेंगे

जन सुरक्षा हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवापारा में वन विभाग ने की त्वरित वृक्ष कटाई की कार्यवाही

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)। प्रभारी अधिकारी शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, नवापारा,अम्बिकापुर ने बताया कि जनसुरक्षा के मद्देनजर परिसर में स्थित विशालकाय सूखे वृक्ष की कटाई वन विभाग द्वारा की गई है जिसके बाद अब यहां लोगों की सुविधा और छाया की व्यवस्था के लिए शेड का विस्तार किया जायेगा। गौरतलब है कि कलेक्टर श्री विलास भोसकर द्वारा शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, नवापारा के निरीक्षण के दौरान शेड निर्माण के निर्देश दिए गए हैं। विगत वर्ष में वृक्ष की शाखा गिरने से अस्पताल का शेड क्षतिग्रस्त हुआ है। इसी कड़ी में जन सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए प्रभारी चिकित्सा अधिकारी शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, नवापारा अम्बिकापुर के द्वारा वनपरिक्षेत्र अधिकारी वन विभाग को आवेदन पत्र दिया गया था। जिस पर वन विभाग ने त्वरित कार्यवाही करते हुए वृक्ष कटाई का कार्य पूर्ण किया।

रेणुका सिंह ने भरतपुर-सोनहत विधानसभा के टॉपर छात्राओं को फोन पर दी बधाई...

» शिफा बी ने 10 वीं और अंकिता रजक ने 12 वीं में मारी बाजी... दोनों बालिकाओं को विधायक देगी इनाम में स्कूटी...

संवाददाता-

मनेन्द्रगढ़,12 मई 2024 (घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड द्वारा 10 वीं, 12 वीं की बोर्ड परीक्षा के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री एवं भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह ने बोर्ड परीक्षा शुरू होने से पहले भरतपुर-सोनहत विधानसभा में टॉप करने वाले छात्र-छात्राओं को बाइक और स्कूटी देने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था मेरे विधानसभा क्षेत्र भरतपुर सोनहत में शिक्षा के प्रति लोगो को जागरूक करने के लिए ऐसी घोषणा होने से वनांचल क्षेत्र के बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करेंगे और अव्वल आने भरसक प्रयास करेंगे। रेणुका सिंह ने छात्रों से खूब मन लगाकर पढ़ने और आगे बढ़ने की अपील करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की थी। आपको बता दें न्यू लाइफ इंग्लिश स्कूल, जनकपुर की 10वीं कक्षा की छात्रा शिफा बी 96.50 प्रतिशत प्राप्त कर 10 वीं बोर्ड परीक्षा में भरतपुर-सोनहत विधानसभा से अव्वल नंबर प्राप्त की एवं स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल, भरतपुर की छात्रा अंकिता रजक ने 91.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर 12 वीं बोर्ड परीक्षा में अव्वल नंबर पर रही। भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह ने दोनों छात्राओं से फोन पर बात कर बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी साथ ही जल्द ही मिलकर दोनों छात्राओं को अपनी घोषणा के अनुरूप इनाम में स्कूटी देने की बात कही। आगे विधायक रेणुका सिंह ने कहा हम अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के लक्ष्य को 2047 तक पूरा करना है, लक्ष्य को पूरा करने में इन बच्चों का अहम रोल होगा।

कोरबांचल के ग्रामीण क्षेत्रों में गहराया जल संकट

» घरों में नल लगने के बावजूद नही पहुंचा जल

-संवाददाता-

कोरबा,12 मई 2024 (घटती-घटना)। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक गर्मी पड़ने से जल संकट बड़ने लगा है । खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में बसे गांव में पानी की समस्या गंभीर होने लगी है। इन क्षेत्रों में न तो ग्रामीणों को पीने के लिए साफ जल उपलब्ध हो पा रहा और न ही खेती के लिए भरपूर मात्रा में पानी। ग्रामीण अंचलों की इस समस्याओं को देखते हुए केंद्र और राज्य सरकार की ओर से कई कोशिशें की जा रही है पर वास्तविकता में सरकारी कोशिशों के बाद भी जमीनी स्तर पर सरकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीण अंचलों के लोगों को नहीं मिल पा रहा । कोरबा जिला से लगभग 85 किलोमीटर की दूरी पर विकासखंड पोड़ी उपरोड़ा क्षेत्र में चोटिया के करीब ग्राम पंचायत लाद स्थित है। गर्मी के दिनों में भूजल स्तर काफी नीचे चले जाने से यहां ग्रामीणों को पीने के लिए पानी नहीं मिल पाता है। इस गंभीर समस्या को देखते हुए केंद्र सरकार के नल जल योजना के तहत ग्राम पंचायत लाद में रहने वाले लोगों को साफ पानी पहुंचाने के लिए पानी की टंकी का निर्माण करने एवं घर- घर जल पहुंचाने के लिए कार्ययोजना बनाते हुए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा टेंडर की प्रक्रिया पूरी कर ग्राम पंचायत लाद के सरईटिकरा और ललमट्टा में लोहे के स्ट्रक्चर पर सिनटेक्स पानी की टंकी लगाया गया एवं हर घर नल लगाया गया, जिससे बिछाए गए पाइप के द्वारा ग्रामीणों को जल की सुविधा मिल सके पर गांव के लोगों कहना है के साल गुजर जाने के बाद भी लोगों के घरों के नल में जल नहीं पहुंचा। जिसपर ग्रामीण शिवलाल पंडो ने बताया कि गांव के लोगों को नल के जरिए पानी उपलब्ध कराने के लिए ग्राम पंचायत लाद के सरईटिकरा पारा में लोहे का स्ट्रक्चर तैयार कर काले रंग की दो सिंटेक्स टंकी लगाया गया एवं सिंटेक्स टंकी तक जल पहुंचे इसके लिए पास ही में 250फीट बोर खोदा गया। बोर में सबमर्शिबल पंप लगाकर संबंधित ठेकेदार ने पाइप के जरिए सिंटेक्स तक पानी पहुंचाया भी साथ ही घरों में पाइप भी बिछा दिया गया लेकिन मेन पाइप जो टंकी से जुड़ा था उसे घरों के पाइप से ठेकेदार द्वारा नही जोड़ा गया जिससे घरों तक पानी नहीं पहुंचा । बीते छह माह से ठेकेदार द्वारा काम को बंद किए जाने पर गांव के लोगों ने इस संबंध में कई बार संबंधित ठेकेदार से संपर्क कर काम सुरू करने की बात भी कही गई,जिसपर ठेकेदार द्वारा सिर्फ काम सुरू करने का आश्वासन दिए जाने से इस गर्मी में हर घर नल लगने के बाद भी गांव के लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है । संबंधित विभाग को चाहिए कि मामले की गंभीरता को देखते हुए उक्त ठेकेदार को जल्द से जल्द काम को पूरा करने को कहे,जिससे ग्रामीणों के समस्याओं का निराकरण हो सके ।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास सचिव राजेश सिंह राणा ने

जिले में विभिन्न पंचायतों का लिया जायजा

» अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र के संचालन सहित विभिन्न कार्यों का किया निरीक्षण

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,12 मई 2024 (घटती-घटना)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री राजेश सिंह राणा रविवार को जिला भ्रमण पर अंबिकापुर पहुंचे। उन्होंने जिले के विभिन्न पंचायतों का भ्रमण कर संचालित योजनाओं और निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण किया। भ्रमण के दौरान उन्होंने सबसे पहले ग्राम पंचायत पेंड्रा कला में आवास योजना के हितग्राहियों के निर्मित एवं निर्माणाधीन आवास का निरीक्षण किया और गुणवत्तापूर्ण निर्माण के निर्देश दिए। इसके बाद उन्होंने विकासखंड लखनपुर के ग्राम पंचायत रजपुरीकला में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे निर्मित सामुदायिक शौचालय निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने सामुदायिक शौचालय में पानी, साफ-सफाई की उपलब्धता सुनिश्चित करने सहित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिससे लोगों को सुविधा हो और सामुदायिक शौचालय की नियमित उपयोगिता बनी रहे।

निरीक्षण के क्रम में सचिव श्री राणा द्वारा ग्राम पंचायत उदयपुर में संचालित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र का औचक निरीक्षण व अवलोकन किया गया। उन्होंने स्वच्छाग्रही दीदियों से सीधे संवाद कर कार्य की जानकारी ली। उन्होंने दीदियों के इस कार्य को सराहना की, साथ ही स्वच्छाग्रही दीदियों को बेहतर काम करने प्रोत्साहित भी किया। क्षेत्र भ्रमण के दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री नूतन कंवर, एपीओ डॉ प्रशांत शर्मा, जिला समन्वयक एसबीएम ग्रामीण व आवास, लखनपुर और उदयपुर के सीईओ जनपद तथा खंड स्तरीय अमला उपस्थित रहे।

पीएचई अधिकारी एवं पुत्र पर अपहरण कर फिरौती मांगने पर,न्यायालय आदेश के बाद दर्ज किया गया एफआईआर

-संवाददाता-

कोरबा,12 मई 2024 (घटती-घटना)। एसईसीएल कर्मी के पुत्र का बैंगलोर में अध्ययनरत के दौरान अपहरण कर फिरौती मांगने के मामले में पीएचई के अधिकारी व पुत्र पर किया गया अपराध पंजीबद्ध । उक्त मामले में मानिकपुर चौकी पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर एफआईआर की कार्यवाही की है । बताया गया के एसईसीएल कॉलोनी सुभाष ब्लॉक निवासी संजय कुमार के दो पुत्र हैं। एक शुभम और शिवम कुमार है। दोनों बैंगलोर में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। जहां एमपी नगर निवासी पीएचई अधिकारी वायएम मेहर राज का पुत्र तन्मय यडल्लु 22 वर्ष भी कुछ दिन शुभम के रूम में रहा। 19 सितंबर 2023 को तन्मय ने संजय कुमार के फोन पर काल कर कहा कि तेरे बेटे का किडनैप कर लिया गया है। तेरे बेटे ने 5.5 लाख रुपए लिया है, उसे दे नहीं तो अच्छा नहीं होगा कहते हुए फोन काट दिया, जिससे संजय सिंह घबरा गया। पुनः फोन करने पर पैसा नहीं देने पर बेटे को मारने की धमकी दी गई। बेटे से बात कराने कहने पर उसी समय मारने, पीटने, चिल्लाने और बेटे के रोने की आवाज आ रही थी। चार घंटे का समय देते हुए पैसे भेजने या तैयार रहने को कहा गया। जिसपर संजय कुमार ने अपने परिचित को लेकर तन्मय के घर पहुंचा, जहां उसके पिता वायएम मेहर राज से मिल कर पूरे वाक्या को बताया । घटना के बारे में बताने पर वायएम मेहर राज ने बेटे की मांग को पूरी कर देने की बात कहते हुए कहा के पैसा वापस करने पर तुम्हारे बेटे को छोड़ देगा । घबराते हुए बेटे को बचाने संजय सिंह ने मानिकपुर चौकी पहुंचकर घटना की शिकायत की। जिसपर पुलिस द्वारा मेहर राज को बुलाकर तन्मय के कब्जे से शुभम को छोडने़ कहा गया। इसके बाद भी शुभम को नहीं छोड़ा गया। मानिकपुर पुलिस के प्रयास पर देर रात शुभम को छोडना़ पड़ा, लेकिन इसके बाद तन्मय ने फोन कर संजय कुमार को धमकी दी और कहा कि उसके पिता को चौकी बुलाकर अच्छा नहीं किया। घटना से घबराकर संजय कुमार ने दोनों पुत्र को अपने साथ कोरबा ले आए। घटना स्थल बैंगलोर होने पर पुलिस ने मामले में कार्यवाही नहीं की। संजय कुमार ने मामले का परिवाद लगाते हुए न्यायालय में अपहरण व जान से मारने की धमकी देते हुए फिरौती की मांग का मामला दर्ज करने की मांग की। जिसपर न्यायालय के आदेश पर धारा 347, 387, 120बी के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया है।

महिला की मारपीट से घायल व्यक्ति की मौत,महिला को पुलिस ने किया गिरफ्तार

-संवाददाता-

कुसमी,12 मई 2024 (घटती-घटना)। कोरंधा थाना अंतर्गत ग्राम सुरबेना में 03 मई 2024 को प्रभुदास तिर्की उम्र 61 वर्ष के साथ मारपीट हुई थी 5 मई को गांव के लोगो ने घर में उसे नग्न अवस्था में बेहोसी की हालत में पाया,गांव के लोगो ने ईलाज के कुसमी अस्पताल लाया जहां चिकित्सकों ने अंदरूनी चोट लगने की बात कही और गंभीर हालत को देखते हुए उसे अंबिकापुर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया जहां रास्ते में उसकी हो मौत हो गई , मौत के बाद पुलिस ने शव का पंचनामा कर मामले की जांच शुरू करते हुए मृतक का पोस्टमार्टम करवाया जिसमें मृतक के साथ मारपीट का मामला सामने आया,पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर विवेचना शुरू किया ,इस घटने के संबध में मिली जानकारी के मुताबिक कोरंधा थाना प्रभारी विरासत कुजूर ने इस घटना की जानकारी बलरामपुर जिले के पुलिस अधीक्षक डॉ लाल उमेद सिंह के साथ-साथ अतरिक्त पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र पांडेय पुलिस अनुविभागीय अधिकारी इम्मानुएल लकड़ा को घटना से अवगत कराया ,वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर कोरंधा पुलिस ने अज्ञात आरोपी की तलाश शुरू की तो वही पुलिस को मृतक का अनिता बाई नामक एक महिला के साथ संबंध होने की जानकारी पुलिस को मिली, उक्त महिला का मृतक के साथ पति पत्नी जैसा व्यवहार होने की बात सामने आई, घटना के बाद से महिला फरार भी हो गई थी लेकिन जैसे ही महिला पुलिस को मिली तो पुलिस ने उससे पुछताछ किया,फिर महिला ने बताया कि मृतक प्रभुदास तिर्की 03 मई 2024 को एक साथ थे दोनो ने दिनभर सुरबेना गांव में घुमते हुए खुब शराब भी पिया और शाम को घर आकर शराब के नशे में मृतक के साथ पैसे और किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध बनाने की बात पर लड़ाई झगड़ा दोनो में होने लगा फिर महिला ने गुस्से में आकर प्रभुदास तिर्की की जमकर लात मुक्के के साथ घर में रखे डंडे से जमकर पिटाई कर दी मारपीट से घायल होकर प्रभुदास गिर कर बेहोश हो गया,वही महिला दुसरे कमरे में जाकर सो गई,दुसरे दिन 04 मई 2024 की सुबह महिला उठी तो उसने देखा की प्रभुदास जमीन पर पड़ा हुआ है उसके नाक से खून निकल रहा था वो बेहोसी की हालत में था ,ऐसा देखकर आरोपी महिला वहा से बस में बैठकर देवरी गांव भाग गई थी,वही कोरंधा पुलिस ने आरोपी महिला अनिता बाई पति बुधन खलखो उम्र 40वर्ष को प्रभुदास तिर्की की हत्या के जुर्म में गिरफ्तार कर नायायिक रिमांड पर भेज दिया,कार्यवाही में थाना प्रभारी विरासत कुजूर, सहायक उपनिरिक्षक दशरथ कुजूर ,प्रधान आरक्षक देवव्रत कुमार विश्वास,आरक्षक पुर्णेश कश्यप,महिला आरक्षक आशा एक्का, प्रतिमा तिर्की का विशेष योगदान रहा।

अमन सहरावत ने भारत को ओलंपिक कोटा दिलाया

» छत्रसाल स्टेडियम में ट्रेनिंग करने वाले अमन ने अपने तीनों मुकाबलो में दोहरे अंक के स्कोर से जीत हासिल की जिसमें से दो तकनीकी श्रेष्ठता वाली जीत रहीं...

इस्तांबुल,12 मई 2024। अमन सहरावत ने उम्मीदों पर खरा उतरते हुए पुरुषों की फ्रीस्टाइल 57 किग्रा वर्ग में पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल कर लिया, लेकिन दीपक पूनिया यहां विश्व क्वालीफायर में पहले दौर में करारी हार के बाद क्वालीफिकेशन दौड़ से बाहर हो गए। अंडर-23 विश्व चैम्पियन और सीनियर एशियाई चैम्पियनशिप विजेता अमन से 57 किग्रा में मजबूत प्रदर्शन की उम्मीद थी और इस 20 साल के पहलवान ने भी निराश नहीं किया। उन्होंने भारत को शर्मसार होने से बचाया भी, क्योंकि इससे पहले किसी पुरुष पहलवान ने पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल नहीं किया था। यूक्रेन के एंड्री यातसेंको को हराने से पहले उन्होंने जॉजी वालेनतिनोव को 10-4 से मात दी। यातसेंको ने भारतीय पहलवान को चुनौती दी लेकिन अमन उनके लिए काफी मजबूत साबित हुए। अमन ने अपने प्रतिद्वंद्वी को 'टेक डाउन' के बाद तकनीकी श्रेष्ठता से जीत हासिल की। उन्होंने सेमीफाइनल में उत्तर कोरिया के चोंगसोंग हान को 12-2 के अंतर से पराजित किया। सुजीत कलकल ने 65 किग्रा में उज्बेकिस्तान के उमिदजोन जलोलोव के खिलाफ 3-2 से जीत दर्ज की और इसके बाद कोरिया के जुनसिक युन को तकनीकी श्रेष्ठता से हराया। सुजीत ने क्वार्टरफाइनल में कनाडा के लाचलान मौरिस को 10-0 से मात देकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। लेकिन वह एशियाई खेलों के चैम्पियन और एशियाई चैम्पियनशिप के रजत पदकविजेता मंगोलिया के तुल्गा तुमुर ओचिर से 1-6 से हार गये। अब उन्हें पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने के लिए दो मुकाबले जीतने होंगे। तोक्यो ओलंपिक में मामूली अंतर से कांस्य पदक से चूके पूनिया (86 किग्रा) पहले मुकाबले में चीन के ताकतवर जुशेन लिन पर बढ़त लेने के बावजूद 4-6 से हार गए। भारतीय टीम में सबसे अनुभवी पहलवान पूनिया पहले पीरियड में 3-0 से बढ़त बनाये थे। चीन के पहलवान ने वापसी करते हुए स्कोर 4-3 कर दिया और अंत में जीत दर्ज करने में सफल रहे। जयदीप अहलावत ने 74 किग्रा में1-3 से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए मोल्दोवा के वासिल डायकॉन के खिलाफ 5-3 से जीत हासिल की और प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंचे। फिर उन्होंने ऑस्ट्रिया के साइमन मार्चल के खिलाफ तकनीकी श्रेष्ठता से जीत दर्ज की लेकिन क्वार्टरफाइनल में स्लोवाकिया के तैमुराज साल्काजानोव से 0-3 से हार गये। वह हालांकि दौड़ में बने हुए हैं। अगर स्लोवाकियाई पहलवान फाइनल में पहुंच जाता है तो उसे रेपेशाज के जरिये एक मौका मिलेगा। इससे पहले दिन में दीपक (97 किग्रा) और अनुभवी सुमित मलिक (125 किग्रा) अपने पहले दौर के मुकाबले हार गए।

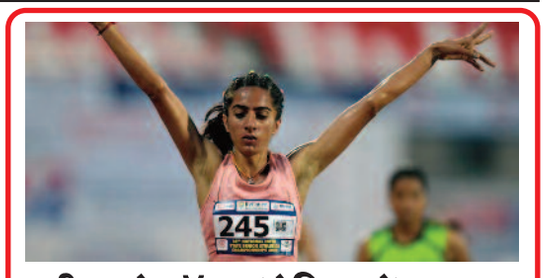

दीक्षा ने लॉस एंजेलिस में 1500 मीटर का राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा

साबले पुरुषों की 5000 मीटर में दूसरे स्थान पर रहे

नईदिल्ली,12 मई 2024। मध्य प्रदेश की ट्रैक एथलीट केएम दीक्षा ने लॉस एंजिल्स में साउंड रनिंग ट्रैक फेस्टिवल में महिलाओं की 1500 मीटर में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया।

25 वर्षीय भारतीय ने विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर कांस्य स्पर्धा में 4:04.78 का समय लेकर तीसरा स्थान हासिल किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने वारंगल में 2021 राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में हरमिलन बैंस द्वारा निर्धारित 4:05.39 के पिछले रिकॉर्ड को बेहतर बनाया।एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एएफआई) के अनुसार दीक्षा का राष्ट्रीय रिकॉर्ड अनुसमर्थन के अधीन है।लॉस एंजिल्स में पुरुषों की 5000 मीटर दौड़ में, स्टार डिस्टेंस धावक अविनाश साबले अपने राष्ट्रीय 5,000 मीटर ट्रैक रिकॉर्ड में सुधार करने से चूक गए और 13:20.37 का समय लेकर दूसरे स्थान पर रहे, जबकि गुलवीर सिंह ने 13:31.95 का समय लिया। महिलाओं की 5000 मीटर में पारुल चौधरी अपना राष्ट्रीय स्तर सुधारने से मामूली अंतर से चूक गईं। वह 15:10.69 (एनआर से 0.34 सेकेंड पीछे) का समय लेकर पांचवें स्थान पर रहीं। उनकी हमवतन अंकिता ने 15:28.88 का समय निकालकर 10वां स्थान हासिल किया।

जिंबॉब्वे ने आखिरी मैच जीतकर

बांग्लादेश को क्लीनस्वीप करने से रोका

ढाका,12 मई 2024। कप्तान सिकंदर रजा और ब्रायन बेनेट की शानदार पारियों की मदद से जिंबॉब्वे ने रविवार को यहां पांचवें और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में 8 विकेट से जीत दर्ज करके बांग्लादेश को पांच मैच की श्रृंखला में क्लीनस्वीप नहीं करने दिया। बांग्लादेश ने पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद 6 विकेट पर 157 रन बनाए। जिंबॉब्वे ने 18.3 ओवर में 2 विकेट पर 158 रन बनाकर जीत हासिल की। बांग्लादेश ने इस तरह से यह श्रृंखला 4-1 से अपने नाम की। जिंबॉब्वे की पारी का आकर्षण कप्तान रजा और बेनेट के अर्धशतक रहे। रजा ने 46 गेंद पर नाबाद 72 रन बनाए जिसमें 6 चौके और चार छक्के शामिल हैं। बेनेट ने 49 गेंद पर पांच चौकों और इतने ही छक्कों की मदद से 70 रन बनाए। इन दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 75 रन की साझेदारी की जिससे जिंबॉब्वे नौ गेंद शेष रहते ही जीत हासिल करने में सफल रहा। इससे पहले बांग्लादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 15 रन पर तीन विकेट गंवा दिए थे। महमुदुल्लाह (44 गेंद पर 54 रन) और कप्तान नजमुल हसन शंटो (36) की पारियों से टीम सम्मानजनक स्कोर तक पहुंची। बेनेट ने गेंदबाजी में भी कमाल दिखाते हुए 20 रन देकर दो विकेट लिए।

आर प्रग्गनानंद ने सुपरबेट शतरंज में मैग्नस कार्लसन को हराया लेकिन तीसरे स्थान पर रहे

नई दिल्ली,12 मई 2024। भारत के आर प्रग्गनानंद ने दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी नॉर्वे के मैग्नस कार्लसन पर एक और जीत दर्ज की और खुद को बचाए रखा, जबकि चीन के वेई यी ने सुपरबेट रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज टूर्नामेंट में अपनी बढ़त को 2.5 अंकों की भारी बढ़त बना ली, जो कि ग्रैंड का हिस्सा है। शतरंज यात्रा. ब्लिट्ज़ इवेंट में अभी भी नौ राउंड बाकी हैं, वेई यी ने ब्लिट्ज़ के पहले दिन सात जीत के साथ 20.5 अंक अर्जित किए हैं। संभावित नौ में से 7.5 के साथ दिन का अंत करते हुए, यी, एक ऐसे व्यक्ति की तरह लगता है जिसके पास जुनून है और जब तक कोई तूफान उस पर नहीं पड़ता, वह ग्रैंड शतरंज टूर का पहला चरण जीतने के लिए तैयार है। 18 साल के कार्लसन इस समय दूसरे स्थान पर हैं और इसके पीछे मुख्य कारण प्रगनानंद हैं, जो खेल के तेज संस्करण में इन दिनों अक्सर दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी को हरा रहे हैं। हालाँकि, प्रग्गनानंद 14.5 अंकों के साथ नेताओं से बहुत पीछे हैं, जिससे यह खिताब के लिए वास्तव में दो-घोड़ों की दौड़ बन जाती है। चौथे स्थान पर 14 अंकों के साथ अर्जुन एरीगैसी हैं जबकि पोलैंड के डुडा जान-क्रिज़्सटोफ 13 अंकों के साथ उनके ठीक पीछे हैं। उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव 12.5 के साथ छठे स्थान पर हैं, जो जर्मनी के विंसेंट कीमर से एक पूर्ण अंक आगे हैं और आठवां स्थान अब जल्दी ही ले लिया गया है। रोमानिया के किरिल शेवचेंको 11 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं।

हॉलैंड के अनीश गिरि थोड़ा सुधार कर 10.5 अंकों के साथ नौवें स्थान पर पहुंच गए, जबकि ब्लिट्ज़ विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर डी. गुकेश के लिए चिंता का कारण बना हुआ है, जो 1,75,000 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि वाले टूर्नामेंट में 9.5 अंकों के साथ अंतिम स्थान पर हैं। कार्लसन ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि प्रागनानंद के खिलाफ दूसरे दौर में हार के बाद उनका तंत्रिका तंत्र ध्वस्त हो गया था। विश्व का नंबर एक खिलाड़ी नौ में से छह अंकों के साथ समाप्त हुआ, जो सभी मानकों के अनुसार एक अच्छा परिणाम है, लेकिन भारतीय से हार के बाद वह फिर से गलती कर गया और जीत की स्थिति से अब्दुसत्तोरोव से हार गया।

दिल्ली कैपिटल्स बल्लेबाज ट्रिस्टन स्टब्स ने

कुलदीप यादव को लेकर किया बड़ा खुलासा

नई दिल्ली,12 मई 2024। दिल्ली कैपिटल्स के हरफनमौला बल्लेबाज ट्रिस्टन स्टब्स ने कुलदीप यादव को लेकर बड़ा खुलासा किया है। स्टब्स ने बताया कि कुलदीप यादव नेट्स में उन्हें गेंदबाजी नहीं करते हैं। द ग्रेड क्रिकेटर पॉकास्ट में ट्रिस्टन स्टब्स ने कहा कि, वह मुझे गेंदबाजी नहीं करेगा, मैंने कई बार उसका सामना करने की कोशिश की है लेकिन वह मुझे गेंदबाजी नहीं करता।

इस पॉडकास्ट में जब स्टब्स से कुलदीप यादव की ट्रेडमार्क रोंग-अन डिलीवरी का सामना करने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने बताया कि बार-बार प्रयासों के बावजूद भारत के स्टार गेंदबाज कुलदीप उन्हें गेंदबाजी करने से मना कर देते हैं।

स्टब्स ने आगे कहा कि, मुझे लगता है कि वह इसे रहस्य बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। इसलिए मैं आपको ये नहीं बता सकता कि मैंने उसका सामना करने की कोशिश की है लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। अपना पहला बड़ा आईसीसी टूर्नामेंट खेल रहे स्टब्स टी 20 वर्ल्ड कप के दौरान दक्षिण अफ्रीका के लिए अहम खिलाड़ी साबित हो सकते हैं। इसके अलावा स्टब्स से टी 20 वर्ल्ड कप की तैयारी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि, वह खुद को तैयार करने के लिए कुलदीप का सामना करना चाहते हैं। अगर भारत और दक्षिण अफ्रीका की स्थिति होती है तो उन्हें टूर्नामेंट के नॉकआउट चरण में खुद को पेश करना होगा। जिस पर इस स्टार खिलाड़ी ने कहा कि मुझे लगता है कि ये चुपचाप नहीं कहा गया है लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हां कुलदीप ऐसा करने में चतुर हैं।

बाहुबली स्टार प्रभास ने बहुप्रतीक्षित फिल्म कन्नप्पा की शूटिंग की शुरू

फिल्म निर्माता और साउथ अभिनेता विष्णु मांचू अपनी महत्वकांक्षी परियोजना कन्नप्पा फिल्म को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। कन्नप्पा इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। विष्णु मांचू तेजी से अपनी फिल्म पर काम कर रहे हैं। कुछ दिन पहले,निर्माताओं ने खुलासा किया कि बॉलीवुड सुपरस्टार अक्षय कुमार ने अपने हिस्से की शूटिंग पूरी कर ली है। वहीं अब फिल्म से जुड़ी नई जानकारी सामने आई है, जो फिल्म के कलाकार प्रभास को लेकर है। यूं तो प्रभास के किरदार पर कई अपडेट आ चुके हैं, लेकिन अब उनकी शूटिंग के बारे में नया अपडेट सामने आया है। फिल्म में अक्षय कुमार अपने हिस्सा के दृश्य शूट कर चुके हैं और अब बारी है प्रभास की। प्रभास अपनी आगामी फिल्म कल्कि 2898 एडी को लेकर व्यस्त हैं। अब उन्होंने अपनी दूसरी फिल्म के लिए समय निकाला और कन्नप्पा के शूटिंग सेट पर पहुंच चुके हैं। जी हां, प्रभास अब कन्नप्पा की शूटिंग शुरू कर चुके हैं। इसकी घोषणा खुद विष्णु मांचू ने की है। इसके साथ ही उन्होंने प्रभास के लुक को लेकर भी फैंस के साथ बड़ी जानकारी साझा की।विष्णु ने अब अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर घोषणा की है कि पैन इंडिया स्टार प्रभास इस पौराणिक फैंटसी ड्रामा की शूटिंग में शामिल हो गए हैं। प्रभास के पैरों को प्रदर्शित करने वाले एक प्री-लुक पोस्टर का अनावरण किया गया। प्रभास के लुक की छोटी सी झलक दी गई है, जिसमें उनके पैरों की झलक है। यह प्रभास के सभी प्रशंसकों के लिए बहुत अच्छी खबर है। हालांकि, प्रभास की भूमिका के बारे में जानकारी गुप्त रखी गई है।इससे पहले विष्णु ने बताया था कि अक्षय ने शूटिंग पूरी कर ली है। साथ ही उन्होंने अक्षय के साथ फिल्म में काम करने का अनुभव भी साझा किया था और अक्षय के साथ अपनी तस्वीरें भी साझा की थीं। वहीं प्रभास के किरदार को लेकर खबर है कि वे फिल्म में कैमियो रोल निभाएंगे। प्रभास फिल्म में नंदी की भूमिका निभाते नजर आएंगे। पहले उनके भगवान शिव की भूमिका निभाने की चर्चा थी, लेकिन वे पहले से ही कल्कि 2898 एडी में इस किरदार को निभा रहे हैं तो ऐसे में वे किसी भी तरह का दोहराव नहीं चाहते हैं।कहा जा रहा है कि अक्षय कुमार फिल्म में भगवान शिव की भूमिका निभा रहे हैं और अफवाह है कि अनुष्का पार्वती की भूमिका निभाएंगी। कन्नप्पा में प्रभास, मोहनलाल, शिवराज कुमार, नयनतारा, कृति सेनन, तमन्ना भाटिया,काजल अग्रवाल,आर सरथकुमार,ब्रह्मानंदम अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन मुकेश कुमार सिंह ने किया है। इस फिल्म का निर्माण 24 फ्रेम्स फैक्ट्री कर रही है। कृति को भी फिल्म में दमदार भूमिका मिली है।

अजय देवगन की फिल्म औरों में कहाँ दम था को मिली नई रिलीज डेट

हाल ही में बोनी कपूर की फिल्म मैदान में नजर आए अजय देवगन की इस वर्ष की 3री प्रदर्शित होने वाली फिल्म औरों में कहाँ दम था एक बार फिर से चर्चाओं में आ गई है। इस फिल्म के जरिये निर्देशक नीरज पांडे लम्बे समय बाद बतौर निर्देशक वापसी करने जा रहे हैं। दर्शकों को ए वडनेसडे, बेबी, नाम शबाना, अय्यारी सरीखी फिल्में देने वाले नीरज पांडे ने अपनी इस फिल्म में अजय देवगन के साथ तब्बू को मुख्य भूमिका में लिया है।अजय देवगन तीन दशक से भी ज्यादा समय से फिल्म इंडस्ट्री में छाए हुए हैं। आज भी प्रशंसकों में अजय के लिए गजब का क्रेज है। निर्माता निर्देशकों के बीच उनकी जबरदस्त माँग बनी हुई है। इस साल अजय की दो फिल्में–शैतान और मैदान रिलीज हो चुकी हैं। आर माधवन के साथ आई फिल्म शैतान' ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की। हालांकि ईद (11 अप्रैल) पर रिलीज हुई फिल्म मैदान' धूल चाट गई।अब अजय की एक और फिल्म औरों में कहां दम था' को लेकर समाचार आ रहे हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार फिल्म को नई रिलीज डेट मिली है। पहले यह फिल्म 26 अप्रैल को ही प्रदर्शित होने वाली थी, लेकिन लगातार दो महीने में तीन फिल्मों का एक साथ प्रदर्शित होना निर्माताओं को सही नहीं लग रहा था। अजय की इससे पहले शैतान 8 मार्च और मैदान 11 अप्रैल को प्रदर्शित हुई थी। अब औरों में कहाँ दम था को 5 जुलाई को सिनेमाघरों में उतारा जाएगा। निर्देशक नीरज पांडे की इस फिल्म में अजय के साथ तब्बू लीड रोल में है। दोनों इससे विजयपथ', हकीकत', तक्षक', फितूर', दृश्यम', गोलमाल अगेन', दे दे प्यार दे', दृश्यम 2' और भोला' सहित कई फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं।यह एक एपिक म्यूजिकल रोमांटिक ड्रामा फिल्म है, जो 2000 और 2023 के बीच सेट है। फिल्म में जिमी शेरगिल, सई मांजरेकर और शांतनु माहेश्वरी भी हैं। फिल्म एक एपिक के साथ अनूठी म्यूजिकल लव स्टोरी है। इसे कई भाषाओं में रिलीज किया जाएगा। फिल्म का ओरिजनल साउंडट्रैक म्यूजिक डायरेक्टर एमएम क्रीम ने तैयार किया है। फिल्म शीतल भाटिया, नरेंद्र हीरावत और कुमार मंगत पाठक (पैनोरमा स्टूडियोज) द्वारा निर्मित है।

अक्षय कुमार की फिल्म खेल खेल में की रिलीज डेट आई सामने

बड़े मियां छोटे मियां फ्लॉप होने के बीच अक्षय कुमार की नई कॉमेडी फिल्म खेल-खेल में की रिलीज डेट का एलान हो गया है। लगातार फ्लॉप देने के बाद भी खिलाड़ी कुमार की झोली में कई फिल्में हैं। अभिनेता अब अपनी आगामी फिल्म खेल-खेल में को लेकर चर्चा में चल रहे हैं। अक्षय कुमार इस फिल्म से एक बार फिर अपनी कॉमिक जोन में एंट्री करने जा रहे हैं। इस बार स्क्रीन पर उनका साथ अभिनेता फरदीन खान देने वाले हैं।खेल-खेल में अक्षय अपने पुराने कॉमिक जोनर में नजर आने वाले हैं। ऐसे में उम्मीद है कि यह फिल्म दर्शकों को एक बार फिर खिलाड़ी कुमार से कनेक्ट कर पाएगी। वहीं, बीते दिन भूल भुलैया के डायरेक्टर प्रियदर्शन ने भी अक्षय कुमार के साथ एक हॉरर फैंटेसी फिल्म पर मुहर लगाई है। बता दें कि अक्षय की यह कॉमिक फिल्म 6 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। फिल्म मेकर्स टी-सीरीज ने अक्षय कुमार, तापसी पन्नू, फरदीन खान, वाणी कपूर, पंजाबी एक्टर और सिंग एमी वर्क और प्रज्ञा जायसवाल स्टारर इस कॉमेडी ड्रामा फिल्म की स्टार कास्ट संग एक तस्वीर शेयर कर फिल्म की रिलीज डेट पर मुहर लगा दी है।फिल्म की घोषणा के बाद से ही फैंस में उत्साह देखा जा रहा है। एक यूजर ने लिखा, अक्षय के डूबते करियर को अब आप ही सहारा दे सकते हैं फरदीन। दूसरे यूजर ने लिखा, फरदीन एक के बाद एक अब स्क्रीन पर धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। एक और यूजर ने लिखा, खिलाड़ी कुमार को फिर से पुराने अवतार में देखने के लिए काफी उत्साहित हैं।

सरफरोश की 25वीं सालगिरह की स्क्रीनिंग के दौरान

आमिर खान ने सरफरोश 2 बनाने का वादा किया

बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान,जो एक परफेक्शनिस्ट हैं, ने हाल ही में अपनी फिल्म सरफरोश की 25वीं सालगिरह मनाई। 25वीं सालगिरह का जश्न मनाने के लिए आमिर और उनकी फिल्म सरफरोश की टीम एक छत के नीचे इकट्ठा हुई और जमकर जश्न मनाया गया। टीम ने अपनी फिल्म की एक स्क्रीनिंग रखी थी, जो सितारों से सजी थी, जिसे रेडियो स्टेशन रेडियो नशा द्वारा आयोजित किया गया था।मुंबई के पीवीआर जुहू में आयोजित सरफरोश की विशेष स्क्रीनिंग के दौरान आमिर ने सरफरोश 2 की घोषणा भी की। अभिनेता को मीडिया से बातचीत करते हुए देखा गया जहां उन्होंने सरफरोश 2 के निर्माण का खुलासा किया।सरफ़रोश 2 के बारे में बोलते हुए, आमिर ने कहा कि वह एक बात के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं, कि हम सही स्क्रिप्ट के साथ आने के लिए अब इसे वास्तव में गंभीरता से लेंगे। उन्होंने यहां तक कहा कि जॉन को यहां से काम पर जाना है और कहा कि सरफरोश 2 बनानी है।खैर, सरफरोश की स्क्रीनिंग, आमिर की अनाउंसमेंट ने इसे और भी खास बना दिया। दर्शकों को आमिर खान की सरफरोश देखने को मिली, जो उनके बेहतरीन प्रदर्शनों में से एक थी।

सरफरोश का निर्देशन जॉन मैथ्यू मैथन ने किया था और इसका प्रीमियर 1999 में हुआ था। फिल्म में सोनाली बेंद्रे,नसीरुद्दीन शाह, मकरंद देशपांडे और अन्य ने महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थीं। कहानी एसीपी अजय राठौड़ के बारे में थी जो भारत में आतंकवादी गतिविधियों की श्रृंखला की जांच करते हैं।

आलिया भट्ट ने अपने नये

फोटोशूट से लोगों को चौंकाया

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट इन दिनों सातवें आसमान पर हैं और दुनिया भर का दिल जीत रही हैं। मेट गाला 2024 इवेंट में रेड कार्पेट पर स्टाइलिश अंदाज में चलते हुए खूबसूरत दिवा ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। अलाई ने अपने सब्यसाची साड़ी लुक से इंटरनेट पर तहलका मचा दिया और प्रशंसकों को और अधिक मांगने के लिए मजबूर कर दिया।

खैर, हाल ही में आलिया भट्ट ने अपने नए फोटोशूट से तस्वीरों की एक श्रृंखला साझा की और अपनी हॉटनेस से सभी को हांफने पर मजबूर कर दिया। आलिया ने अपने इंस्टाग्राम पेज पर हाल ही में एक मैगजीन शूट के लिए गुच्ची के आउटफिट पहने। एक तस्वीर में आलिया बिना बटन वाली जैकेट और मैचिंग शॉर्ट्स में पोज देती नजर आईं। उसने ब्रा छोड़ दी और परफेक्ट तस्वीर के लिए पोज़ देते हुए आकर्षक लग रही थी।

नेटिज़न्स ने तुरंत उनका कमेंट सेक्शन भर दिया और उनके स्टाइल की तुलना दीपिका पादुकोण और करीना कपूर खान से की। यहां तक कि उन्होंने उनके स्टाइल को कॉपी करने के लिए उन्हें कॉपीकैट भी कहा। एक यूजर ने लिखा, आलिया बिना बटन वाली जैकेट में पोज देती नजर आई तो दूसरे ने कमेंट किया, चौथी तस्वीर रणबीर नहीं रणवीर का प्रभाव है।

इन्हें देख सकते हैं केवल वीआईपी लोग, 6 वन भैंसों पर अब तक करोड़ों रुपये खर्च

दो वीआईपी वन भैंसे 2 माह में पी गए 4 लाख 60 हजार का पानी

रायपुर 12 मई 2024(ए)। छत्तीसगढ़ के बारनवापारा अभ्यारण्य में दो वीआईपी वन भैंसे हैं। इन्हें 7 पर्दों के पीछे छुपा कर रखा गया है, जिन्हें केवल वीआईपी लोग ही देख सकते हैं। इन भैंसों के खाने-पीने, रखरखाव और प्रजनन के लिए सरकार ने 1 करोड़ 50 लाख रुपए से भी अधिक खर्च कर दिया है। लेकिन जिस उद्देश्य से इन भैंसों को विदेश से छत्तीसगढ़ लाया गया है ना तो वह पूरा हो सका और ना ही इन वन्यप्राणियों को स्वतंत्रता से विचरण करने दिया जा रहा है। दरअसल, 12 मई 2020 को असम से प्रदेश के बारनवापारा अभ्यारण लाये गए ढाई साल के दो सब एडल्ट वन भैंसों को असम के मानस टाइगर रिज़र्व से पकड़ने के बाद दो माह वहां बाड़े में रखा गया, एक नर था और एक मादा। वहां पानी पिलाने की व्यवस्था के लिए चार लाख 4,56,580 रुपए का बजट दिया गया। इसके बाद जब ये बारनवापारा लाये गए तब उनके लिए रायपुर से 6 नए कूलर भिजवाए गए, निर्णय लिया गया की तापमान नियंत्रित न हो तो एसी लगाया जाए, ग्रीन नेट भी लगाई गई।

जनता के करोड़ों रुपये बर्बाद ?

सिंघवी ने पूछा कि इन्हें सिर्फ वी.आई.पी. को ही क्यों देखने दिया जाता है? जब कि उनको मालूम था कि छत्तीसगढ़ में शुद्ध नस्ल का एक ही वन भैंसा बचा है, जो बुढा है। जिससे वंश वृद्धि नहीं हो सकेगी,तो फिर जनता का करोडों रूपया क्यों बर्बाद किया? ये कैसी अत्याचारी सोच है कि, खुले में घूम रहे संकटग्रस्त मूक जानवर को आजीवन बंधक बना कर वन विभाग के अधिकारियों को खुशी मिल रही है?

कितने करोड़ रुपए हुए खर्च ?

सिंघवी ने आरोप लगाया है कि, वन विभाग के पास मुख्यालय में और फील्ड डायरेक्टर उदंती सीता नदी टाइगर रिजर्व में, जिनको बजट आबंधित किया जाता है, उन्हें असम और बारनवापारा में वन भैसों पर खर्च की गई राशि की जानकारी ही नहीं है। इसलिए प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) को प्रेस विज्ञप्ति जारी करके आज की तारीख तक के असम से लाए गए वन भैंसों पर कुल कितने करोड़ रुपए खर्च हुए हैं, इसकी जानकारी जनता को देना चाहिए।

वन भैंसों को बंधक बनाकर रखना था प्लान ?

सिंघवी ने आरोप लगाया कि, पहले दिन से ही प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) के गुप्त प्लान के अनुसार इन्हें आजीवन बारनवापारा अभ्यारण में ही बंधक बनाकर रखना था। इसलिए इन्हें बारनवापारा अभ्यारण में छोड़ने की भारत सरकार की शर्त के विरुद्ध बंधक बना रखा है। सिंघवी का आरोप है कि, अब ये आजीवन बंधक रह कर बारनवापारा के बाड़े में ही वंश वृद्धि करेंगे, जिसमें एक ही नर की संतान से लगातार वंश वृद्धि होने से इनका जीन पूल ख़राब हो जायेगा।

क्या जनता के 40 लाख रुपये का भोजन कराने लाये वन भैंसे ?

वन्य जीव प्रेमी नितिन सिंघवी ने इस मामले में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) से पूछा कि, असम में स्वतंत्र विचरण करने वाले वन भैंसे जो वहां प्राकृतिक वनस्पति, घांस खा कर जिन्दा थे। वहां रहते तो प्रकृति के बीच वंश वृद्धि करते। उनको हर साल जनता की गाढ़ी कमाई का 40 लाख का भोजन कराने के लिए छत्तीसगढ़ लाए हैं क्या?

भैंसों पर करोड़ों खर्च

2023 में चार और मादा वन मादा भैंसे असम से लाये गए,तब एक लाख रुपए खस के लिए दिए गए,जिस पर पानी डाल करके तापमान नियंत्रित रखा जाता था। वर्ष 2020 में असम में बाड़ा निर्माण किया गया था, उस पर कितना खर्च हुआ इसकी जानकारी वन विभाग के पास नहीं है। लेकिन 2023 में उसी बाड़े के संधारण के लिए 15 लाख जारी किये गए। दोनों बार में वन भैंसे के असम से परिवहन इत्यादि के लिए 58 लाख जारी किए गए।

जू अथॉरिटी ने नहीं दी प्रजनन केंद्र की अनुमति

वर्ष 2019-2020 से लेकर 20-21 तक बारनवापारा के प्रजनन केंद्र के निर्माण और रखरखाव के लिए एक करोड़ साठ लाख रुपए जारी किए गए। इसके अलावा 2021 से आज तक और भी राशि खर्च की गई है। इतना सब करने के बाढ़ भी केंद्रीय जू अथॉरिटी ने भी दो टूक शब्दों में मना कर दिया है कि, बारनवापारा अभ्यारण में प्रजनन केंद्र की अनुमति हम नहीं देंगे।

एक साल में 40 लाख का करते हैं भोजन

दस्तावेज बताते है कि सिर्फ 23-24 में बारनवापारा में 6 वन भैंसों के भोजन - चना, खरी, चुनी, पैरा कुट्टी, दलिया, घांस के लिए 40 लाख रुपए जारी किए गए हैं।

जानिये कैसे करेंगे वंश वृद्धि

रायपुर के वन्य जीव प्रेमी नितिन सिंघवी ने वन विभाग पर आरोप लगाया कि, प्लान तो यह था कि असम से वन भैंसे लाकर, छत्तीसगढ़ के वन भैंसे से प्रजनन करा कर वंश वृद्धि की जाए परंतु छत्तीसगढ़ में शुद्ध नस्ल का सिर्फ एक ही नर वन भैंसा 'छोटू' उदंती सीता-नदी टाइगर रिजर्व में बचा है, जो कि बूढा है और उम्र के अंतिम पड़ाव पर है। उसकी उम्र लगभग 24 वर्ष है। वन भैंसों की अधिकतम उम्र 25 वर्ष होती है, बंधक में 2-4 साल और जी सकते हैं। बुढ़ापे के कारण जब छोटू से प्रजनन कराना संभव नहीं दिखा तो उसका वीर्य निकाल आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन के द्वारा प्रजनन का प्लान बनाया गया,जिसकी तैयारी पर ही लाखों रुपए खर्च हो चुके हैं। सिंघवी ने आगाह किया कि, यह वैसा ही आत्मघाती होगा जैसे किसी 90 वर्ष के बुजुर्ग से जबरदस्ती वीर्य निकलवाना,छोटू ऐसा करने से मर भी सकता है,जिसकी जवाबदारी प्रधान मुख्य वन संरक्षक की रहेगी।

भैंसों को टाइगर रिजर्व में छोड़ना होगा गलत

अब अगर असम से लाये गए वन भैंसों को अगर उदंती सीता नदी टाइगर रिजर्व में छोड़ा जाता है, तो वहां दर्जनों क्रॉस ब्रीड के वन भैंसे हैं। जिनसे क्रॉस होकर असम की शुद्ध नस्ल की मादा वन भैंसों की संतानें मूल नस्ल की नहीं रहेंगी। इसलिए इन्हें वहां पर भी नहीं छोड़ा जा सकता।

बाइक से टक्कर के बाद महिला को आई चोट,आक्रोशित परिजनों ने चालक को जमकर पीटा,इलाज के दौरान हुई मौत

गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही,12 मई 2024 (ए)। अगर कोई गलती करे तो क्या लोगो को कानून हाथ में लेने का हक हो जाता है ? पेण्ड्रा के बसंतपुर में ऐसी घटना सामने आई जिसे लेकर ये सवाल खडा हो रहा हैं। यहां बाइक से टक्कर के बाद महिला के परिजनों ने एक शख्स के साथ जैसा सलूक किया वो इंसानियत को शर्मसार करने वाला है।

दरअसल,बसंतपुर में शनिवार शाम सड़क पर दौड़ रहे बच्चे को बचाने के चक्कर में बाइक सवार युवक किनारे चल रही महिला से टकरा गया। इससे गुस्साई महिलाओं ने अपने परिवार के लोगो को बुलाकर बाइक सवार की बेरहमी से पिटाई कर दी।. जिसके बाद उसे घायल अवस्था में अस्पताल ले जाय गया जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। इस वारदात की सूचना के बाद आक्रोशित परिजनों ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाकर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

बता दें कि मृतक का नाम रामा पनिका है जो कि जिले के आमाडांड गांव का रहने वाला था, मृतक के भाई रामप्रसाद ने बताया कि रामा की पत्नी की मौत हो चुकी है और वह मजदूरी कर अपने माता-पिता और 10 साल के बेटे का भरण पोषण करता था।. बुधवार को रामा किसी काम से पेण्ड्रा आए हुए था। काम निपटने के बाद वह अपनी बाइक से वाप घर लौट रहे था। इस दौरान बसंतपुर के पास महिलाएं बच्चों के साथ सड़क पर टहल रही थी। इसी दौरान बच्चा सड़क पर दौड़ने लगा,जिसे बचाने के चक्कर में रामा आशा साहू से जा टकराया। टक्कर की वजह से उसे चोट लगी थी, जिसके बाद उसने अपने परिजनों को फोन कर मौके पर बुलवाया। इसके बाद मौके पर पहुंचे जगजीत साहू,दुर्गा प्रसाद साहू और घर की महिला सदस्यों ने आशा को अस्पताल भेजा और रामा के साथ मारपीट करने लगे। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक घटना के दौरान आसपास के ग्रामीणों और राहगीरों ने उन्हें रोकने की भी कोशिश की, लेकिन उन्होंने लोगो की एक न सुनी और रामा को मारते-मारते अधमरा कर दिया। इस दौरान वह बेसुध हो गया था। इधर किसी ने घटना की जानकारी रामा के भाई रामप्रसाद को दी। जिसके बाद वह मौके पर पहुंचे और एंबुलेंस से अपने घायल भाई को अस्पताल पहुंचाया। इसके बाद डॉक्टरों रामा की हालत देख उसे बेहतर इलाज के लिए बिलासपुर सिम्स रेफर कर दिया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

गुस्साएं परिजन मांग रहे इंसाफ

बता दें कि रामा की मौत से जहां एक ओर उसके वृद्ध माता-पिता का सहारा छिन गया है. वहीं, 10 साल का बेटा भी बेसहारा हो गया है. रामा की मौत से आक्रोशित परिजनों और समाज के लोगों ने पेण्ड्रा थाने पहुंचकर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज करवाकर दोषियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की मांग की है. वहीं पेण्ड्रा पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच में जुट गई है।

महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप मामले पर आईजी अमरेश मिश्रा का बड़ा खुलासा

बर्खास्त पुलिस आरक्षक अर्जुन यादव के पैनल के 5 सटोरिये कलकत्ता से गिरफ्तार,सैंकड़ों बैंक खातों के साथ 32 करोड़ का मिला लेन-देन

रायपुर 12 मई 2024(ए)। महादेव ऑनलाइन सट्टा एप मामले में कई तार खुलते जा रहे हैं। महादेव एप पर एक बार फिर से रायपुर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। महादेव 364 पैनल से आईपीएल सट्टा संचालित करते बिहार के 5 अंतर्राज्यीय सटोरियों को कलकत्ता से गिरफ्तार किया गया है। रायपुर पुलिस की ऑर्गे नाइजेशनल इनपुट पर यह कार्रवाई की गई है। यह ईओडब्ल्यू में गिरफ्तार बर्खास्त पुलिस आरक्षक अर्जुन यादव का पैनल था। मामले का खुलासा रायपुर रेंज आईजी अमरेश मिश्रा ने किया है।

सटोरिये कोलकाता में बैठकर महादेव 364 आईडी पैनल से आईपीएल क्रिकेट मैच में सट्टा का संचालन कर रहे थे। इस पैनल के आरोपियों के साथ अब तक कुल 13 सटोरिये गिरफ्तार हुए हैं। सभी सटोरियें बिहार के रहने वाले हैं। जो कोलकाता में फ्लैट किराये से लेकर कर पैनल का संचालन रहे थे। पुलिस ने सटोरियों के कब्जे से 7 लैपटॉप,19 मोबाइल,7 पास बुक,5 चेक बुक और 10 एटीएम जब्त किया गया है। जब्त सामान की कीमत है लगभग 6 लाख 60 हजार रूपये है। पूर्व में कलकत्ता से ही 8 सटोरियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 5 लैपटॉप,36 मोबाइल जब्त किये गए थे। कुल जब्त सामग्रियों की कीमत 12 लाख रूपये है।

13 सटोरियों के पास से मिला 32 करोड़ से अधिक का लेन-देन

मामले में गिरफ्तार सभी 13 सटोरियों के लैपटॉप और मोबाइल में लगभग 32 करोड़ रूपये से अधिक के लेन-देन की जानकारी प्राप्त हुई है। गिरफ्तार सटोरियों से पैनल संचालन के लिए उपयोग किये जाने वाले कुल 35 बैंक खातों की जानकारी भी मिली है। जिसमें ट्रांजैक्शन का विश्लेषण पुलिस कर रही है। वहीं हजारों प्लेयर की जानकारी भी प्राप्त हुई है। इन सभी सटोरियों के खिलाफ छत्तीसगढ़ जुआ एक्ट के तहत अपराध दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रहे है। वहीं खुलासे में आईजी मिश्रा ने बताया कि वर्ष 2024 के आईपीएल क्रिकेट मैच के दौरानएंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट की टीम ने अब तक 9 प्रकरण में कुल 62 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिनसे लगभग 110 बैंक खातों की जानकारी प्राप्त की गई है। प्राप्त बैंक खातों के राशियों को होल्ड और फ्रीज कराने के लिए बैंकों को पत्राचार किया जा रहा है।

गिरफ्तार सटोरियों बिहार के बांका जिले के हैं...सभी के नाम

- गोपी यादव पिता शंकर यादव (23 साल) निवासी बारहाठह पोस्ट सुईया, कटोरिया थाना.
- महेश यादव पिता गोपाल यादव (19 साल) निवासी ग्राम धनोछी पोस्ट पिड़रा, चांदन थाना.
- मिथुन कुमार यादव पिता बालेश्वर यादव (24 साल) निवासी ग्राम घाटीबरन पोस्ट, कटोरिया थाना.
- मुकेश कुमार यादव पिता परमेश्वर यादव (29 साल) निवासी ग्राम बोड़ा पोस्ट, सुईया थाना.
- रूपेश कुमार यादव पिता प्रकाश यादव उम्र 21 साल निवासी चांदोली पोस्ट बोरहारा बेल्हर थाना.

मातृ दिवस पर सीएम विष्णुदेव साय ने मां के साथ खुशनुमा पल का वीडियो किया शेयर

रायपुर 12 मई 2024(ए)। पूरी दुनिया में आज यानी 12 मई को मदर्स डे सेलिब्रेट किया जा रहा है। यह खास दिन मई महीने में आने वाले दूसरे रविवार को मनाया जाता है। मदर्स डे के दिन अपनी मां और उनके साथ अपने प्यारे रिश्ते को सेलिब्रेट किया जाता है। इस खास दिन पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी अपनी मां के साथ खुशी के पल का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है और अपनी मां के लिए कुछ पंक्तियां लिखी हैं। साथ ही प्रदेश की सभी माताओं को प्रणाम किया है। मातृ दिवस पर सीएम विष्णुदेव साय ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा है, मां के लिए क्या लिखूं,मां ने तो सबको लिखा है। मातृ दिवस के शुभ अवसर पर प्रदेश की सभी महतारियों को सादर प्रणाम।

छत्तीसगढ़ में फिर बदला मौसम का मिजाज

तेज आंधी-तूफान और बारिश से जनजीवन हुआ अस्त-व्यस्त, पेड़ टूटकर सड़क पर गिरे, इन जिलों के लिए अलर्ट जारी

रायपुर 12 मई (ए)। छत्तीसगढ़ में मौसम ने एक बार फिर करवट ली है। पिछले कई दिनों प्रदेश के कई जिले में लगातार तेज आंधी-तूफान और बारिश का सिलसिला जारी है। वहीं आज सुबह से ही प्रदेश के कई इलाकों में बादल छाए हुए है। आज दक्षिण छत्तीसगढ़ में कोंडागांव समेत आसपास के इलाकों में आंधी तूफान के साथ झमाझम बारिश हो रही है। अचानक मौसम में आए बदलाव की वजह से जनजीवन प्रभावित हुआ है। रायपुर-जगदलपुर मार्ग पर कई जगह पेड़ टूटकर सड़क पर गिर गए है। कई जगहों पर बिजली के तार टूटने से गांवों में बिजली गुल हो गई है। वहीं किसानों की फसलों को भी नुकसान हुआ है. राजधानी रायपुर और आसपास के जिलों में भी आसमान पर काले बादल छाए हुए है। जानकरी के मुताबिक,उत्तर-पश्चिम राजस्थान से मध्यप्रदेश,झारखंड, पश्चिम बंगाल होते हुए दक्षिण असम तक एक द्रोणिका है। मध्यप्रदेश और आसपास 1.5 किमी की ऊंचाई पर एक चक्रवात है. इस सिस्टम की वजह से समुद्र से नमी आ रही है.। राजस्थान और मध्यप्रदेश में इस वजह से बारिश हो रही है। जिसका असर छत्तीसगढ़ में भी दिख रहा है। मौसम विभाग ने आज सरगुजा,जशपुर,बलरामपुर, बिलासपुर,पेंड्रा,रायगढ़, मुंगेली, कोरबा, जांजगीर, रायपुर, बलौदा बाजार, गरियाबंद,धमतरी,महासमुंद, दुर्ग,बालोद,बेमेतरा,कबीरधाम, राजनांदगांव में हल्की बारिश की संभावना जताई हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 5 दिनों तक छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में गरज-चमक के साथ कई इलाकों में बारिश की संभावना हैं। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि 13 मई से बारिश,अंधड़ और गरज-चमक पड़ने की गतिविधियां बढ़ेंगी, इसका असर राज्य के सभी संभागों में नजर आएगा। 15 मई तक प्रदेश में यही हालात रहेंगे।

सेमरा के जंगल में पुलिस मुठभेड़ में मारे गए नक्सली की हुई पहचान, सिर पर था पांच लाख का इनाम

गरियाबंद 12 मई 2024(ए)। धमतरी और गरियाबंद जिले के सीमा पर ग्राम सेमरा के जंगल में पुलिस और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में मारे गए नक्सली की पहचान मंगल मड़काम उर्फ अशोक के रूप में हुई है। मुठभेड़ के बाद जवानों ने मौके से नक्सली के शव सहित नक्सली साहित्य बरामद किया है. नक्सली मंगल मड़काम उर्फ अशोक बीजापुर जिले के गंगालूर थाना अंतर्गत ग्राम करका का निवासी है, जिसके सिर पर पांच लाख रुपए का ईनाम था. मंगल मड़काम प्रतिबंधित संगठन सीपीआई माओवादी सीसीएम गणेश उईके का गनमैन और एरिया कमेटी का सदस्य था।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)